Year-79

साप्ताहिक भविष्य

२१ जून से २७ जून १९७९ तक
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : इन दिनों आप व्यर्थ के झंझटों से ही परेशान अधिक रहेंगे, खर्चा बढ़ेगा, आय यथार्थ, यात्रा की आशा है, व्यापारिक स्थिति में सुधार होगा परन्तु आर्थिक स्थिति पहले समान ही रहेगी, परिवार से सुख।

वृष : व्यर्थ की दौड़-धूप, परेशानी अधिक, लाभ कम, अन्य दिनों में हालात प्रायः ठीक ही चलेंगे, कोई बिगड़ा काम बन सकता है, सरकारी काम हो तो उसमें सफलता मिल जावेगी, व्यय अधिक करना पड़ेगा।

मिथुन : परिश्रम करने पर अधूरे पड़े काम पूरे हो जायेंगे जिससे आर्थिक लाभ भी अच्छा होगा, आत्मविश्वास बढ़ेगा, शुभ कामों में रुचि, अफसरों से मेल जोल, बड़ों से चिन्ता, हानि का भय है।

कर्क : प्रयास करने पर सफलता मिल तो जावेगी परन्तु मिलेगी देर से, व्यापार की दशा पहले ही समान चलेगी, अधिक व्यय के होने से आर्थिक परेशानी बनेगी, धर्म कर्म से मन की शांति।

सिंह : नई वस्तुओं की खरीद पर व्यय करेंगे, कोई अप्रिय घटना हो सकती है जिससे परेशानी पैदा होगी, घर में व्यर्थ का क्लेश, स्थायी साधनों से धन लाभ होता रहेगा, परिश्रम सफल रहेगा।

कन्या : सावधानी से रहें, उलझनें बढ़ेंगी, वाद-विवाद न करें तो अच्छा है, अन्य दिनों में परिश्रम करने पर सफलता मिलती रहेगी, परिवार से सुख, यात्रा की आशा है जो सफल रहेगी, काम धन्धा ठीक चलेगा।

तुला : किसी विशेष समस्या का अन्त हो जावेगा, कोई टूटा हुआ सम्बन्ध फिर से जुड़ जावेगा, लाभ बढ़ेगा परन्तु व्यय भी कम न होगा, कोई विशेष काम पूरा हो जावेगा जिससे भविष्य में अच्छा लाभ मिलेगा।

वृश्चिक : आय में वृद्धि, राजकर्मचारियों से मेल जोल एवं काम भी बनते रहेंगे, नई आशाएं जागेंगी, किसी निकटतम रिश्तेदार से मिलाप एवं खुशी होगी, मनोरंजन आदि पर व्यय, व्यापार में सुधार।

धनु : क्षुब्ध वातावरण के होते हुए भी आपका साहस एवं आत्मविश्वास दृढ़ रहेगा, हालात का सामना करने पर कुछेक गम्भीर समस्याओं से छुटकारा मिलेगा, लाभ भी बढ़ेगा, यात्रा सफल, व्यय बढ़ेगा।

मकर : संघर्षपूर्ण होने के साथ-साथ यह सप्ताह दिलचस्प भी कहा जा सकता है, आय व्यय समान, काम समय पर बनते रहेंगे, सोशल कामों में समय अच्छा व्यतीत होगा, लाभ एवं सफलता में रुकावट पड़ेगी।

कुम्भ : कोई विशेष या शुभ समाचार मिलेगा, सफर की भी आशा है जो लाभप्रद रहेगी, घरेलू हालात अनुकूल चलेंगे, किसी पुरानी उलझन से छुटकारा पायेंगे तो कोई नई समस्या पैदा हो जावेगी।

मीन : स्थायी साधनों से धन लाभ होता रहेगा, नया काम शुरू न करें तो अच्छा है, भाग्य पूरा साथ न देगा, यात्रा सफल रहेगी परन्तु हालात पहले से ठीक चलेंगे, विरोधी अधिक परन्तु हानि न कर पायेंगे।

आपके पत्र

मैं दीवाना का तबसे पाठक हूँ जब इसकी कीमत ३० पैसे थी। मैं समझता हूं कि मुझे अपनी जिन्दगी में अपनी पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त एक मात्र 'दीवाना' से प्यार है। मुझे हर सप्ताह दीवाना का बेसब्री से इन्तजार रहता है। प्रत्येक स्तम्भ ऐसा होता है कि हंसी रोके नहीं रुकती। आज पत्र लिखने का मूल कारण अंक १८ में अन्तिम पृष्ठ पर छपे विज्ञापन हैं जो कि इतने हास्य से भरपूर है कि लिखना असम्भव है। मेरी मित्र मंडली में तो एक जिज्ञासा है कि आखिर आप यह हंसी का खजाना हर सप्ताह नया किस प्रकार तैयार करते हैं। मेरी प्यारी पत्रिका के लिए मेरी शुभ कामनायें व अंक १८ के अंतिम पृष्ठ के कार्टून के लिए हार्दिक बधाई।

अजय शर्मा—सहारनपुर

दीवाना का नया अंक १८ दो दिन बाद मिला, पढ़ा और हंसे बिना नहीं रहा। इस अंक में सभी फीचर एक से बढ़कर एक थे, विशेषकर मुझे मुख पृष्ठ, पंचतंत्र, सवाल यह है। घसीटाराम जी की (साइकोपैंथी) नये अनोखे प्रकाशन, जो न समझे वो अनाड़ी है। बेचारे मौसा जी की लेखिका रीता जी को बहुत-बहुत धन्यवाद तथा तूफान के बाद के लेखक शिव रैना जी को धन्यवाद। कविता, कार्टून, चुटकुले तो दीवाना में अच्छी छाप लगाये हुए हैं। दीवाना में अब किसी भी प्रकार की कमी नहीं रह गयी। दीवाना अब पूर्ण रूप से हम पाठकों का मनोरंजन कर रहा है। मेरी यही कामना है कि दीवाना हम पाठकों का इसी तरह मनोरंजन करता रहे। दीवाना के आगामी अंक का बड़ी बेचैनी से इन्तजार है।

मुन्ना बाबू—कानपुर

'अंक १५ मिला। सारी की सारी सामग्री पसन्द आई जिसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। आशा है अगला अंक भी ऐसा ही रोचक होगा—

सुरेन्द्र—जमशेदपुरी

दीवाना का नया अंक १८ मिला। सारे दीवाने के आकर्षण का केन्द्र मुख पृष्ठ था। फिर ज्यों-ज्यों पृष्ठ पल्टे तो मजा दुगना होता गया। सच पूछो तो सम्पादक भाई ये दीवाना मुझे इतना रुचिकर लगा कि मैं स्पष्ट नहीं कर सकता। मोटू-पतलू, गौतम-गोविंदा, परोपकारी तथा धारावाहिक उपन्यास 'ठोकर' बहुत ही अच्छे लगे। आप से एक अनुरोध है कि आप खिलाड़ियों के रंगीन फोटो शीघ्र छापें।

रमन विकास छाबड़ा—सिरसा

आपके दीवाना की तारीफ मैं अपनी लेखनी से नहीं कर पा रहा हूँ। इसको तो 'हास्य-व्यंग-सम्राट' पत्रिका घोषित कर देना चाहिए।

अंक १७ इस समय मेरे हाथ में है। 'मोटू-पतलू', 'पंचतंत्र', 'सिलबिल-पिलपिल', 'फिल्मी पैरोडी' आदि पढ़कर बहुत हंसी आई। चिल्ली का 'प्रेम-पत्र' स्तम्भ बन्द करने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया। किन्तु 'चिल्ली-लीला' और 'फिल्म पैरोडी' हर अंक में दिया करें। आगामी अंक का बेसब्री से इन्तजार कर रहा हूँ।

मुख पृष्ठ पर

बड़े भाग्य हैं भारत के
जो ऐसा पाया चिल्ली,
चलता फिरता टी॰वी॰है यह
लगाओ पूना चाहे दिल्ली।
यही हाल रहा इसका तो
नहीं होगा कोई इसका सानी
दुनिया भर के साईंसदान भी
इसके आगे भरेंगे पानी॥

दीवाना

अंक : २२, २१ जून से २७ जून १९७९ तक
वर्ष : १५

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाही: २५ रु० वार्षिक: ४८ रु० द्विवार्षिक: ९५ रु०

काका के कारतूस



प्रश्न नोवाना के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के

आर के. यादव, नन्दरामपुर बास, (हरियाणा)

प्र० : शमां ने पूछी थी, इक बात ये परवाने से,
बता दीवाने मजा आता क्या जल जाने से ?

उ० : देता जवाब, लेकिन वह छिन निकल गया,
आया सवाल बाद में, पहिले वो जल गया।

योगेश संघवी जैन, बेरमो (हजारी बाग)

प्र० : काका क्या है मुझमें 'दोष' साली करती रहती रोष ?

उ० : ठीक करो नीयत का कोष, साली नहीं करेगी रोष।

योगेश अग्रवाल, डीमापुर (नागालैंड)

प्र० : काग की चोंच में अंगूर खुदा की कुदरत,
हूर की बांहों में लंगूर खुदा की कुदरत ?

उ० : हाथी पं जाने वाला, गदहे चरा रहा है,
गद्दी पं बैठा बंदर, रसगुल्ले खा रहा है।

निरंजन कुमार डोकानियां, जमुई (मुंगेर)

प्र० : आने वाले मेहमान का स्वागत हाथ मिलाकर करते हैं,
जाने वाले को हाथ हिलाकर क्यों विदा करते हैं ?

उ० : हाथ मिलाकर दिखाया टैम्परेरी प्यार,
हाथ हिलाकर कह रहे, अब मत आना यार।

कुमारी आशारामनानी, कटिहार (बिहार)

प्र० : मैं काकीजी से पूछना चाहती हूं कि काकाजी किस पर दीवाने हैं ?

उ० : काकी से पूछती हो, हम उनसे क्या जुदा हैं ?
हम काकी के दिवाने, वे काका पं फिदा हैं।

जगजीत सिंह साहनी, बगीची पीरजी—दिल्ली

प्र० : लाल रंग खतरे की निशानी है तो दुल्हिन को वरमाला के समय लाल साड़ी क्यों पहनाई जाती है ?

उ० : लाल रंग यों कह रहा, छोड़ो स्वेच्छाचार,
खतरा पल्ले से बंधा, अब रहना हुशियार।

भंवरलाल शर्मा, मारवाड़ जकशन

प्र० : इस बार आपने होली किसके साथ खेली थी ?

उ० : सूनी रहती जैसे भोजन के बिन थाली,
ऐसे रही साली बिन, होली बीती खाली।

राजेश कुमार, रुदौली (बाराबकी)

प्र० : काका, उत्तर के लिए, दिल मेरा बेताब
डाले लैटर तीन, क्यों देते नहीं जवाब ?

उ० : डाकू डाक उड़ा रहे, अपनी क्या मिस्टेक,
तुमने डाले तीन खत, हमें मिला है एक।

दुर्गाप्रसाद चतुर, गांधीलेन, नागपुर

प्र० : प्रेमिका और पत्नी में क्या अन्तर है काका ?

उ० : प्रिया के सेवक हो तुम, पत्नी तुम्हारी सेविका,
पत्नी बासी रोटी है, खस्ता कचौड़ी प्रेमिका।

श्याम एस. माहेश्वरी, फारबिसगंज (बिहार)

प्र० : यदि प्रेमिका विवाह के लिये जल्दबाजी कर रही हो तो

उ० : और किसी पर लगी हो, उसकी चाह-निगाह,
क्या गारंटी है कि वह तुमसे करे विवाह ?

अशोक जौहर 'नीलम', देहरादून

प्र० : प्रेम इश्क में क्या फर्क है काका,

उ० : इश्क करें शायर मियां, कवि करते हैं प्रेम,
साहब के धन माल से, लव करती है मेम।

मदन किशोर होतवानी, रायपुर (म. प्र.)

प्र० : देश से प्यार करना चाहिए या पैसे से ?

उ० : देश धर्म में क्या धरा, पैसे में आनन्द,
अक्लमंद से कह रहे, मिस्टर मूर्खानन्द।

एस. बोगटी 'सानू', अमृतसर

प्र० : एक सुन्दरी से हो गया है लव, बताइए क्या करूं अब ?

उ० : तारे गिनों बिताओ शब, टपक पड़े वह जाने कब।

विष्णु कुमार मुरारका, नूतनगंज-बांकुड़ा (बंगाल)

प्र० : भगवान जब देता है तो छप्पर फाड़कर देता है, क्या य सच है ?

उ० : एक रुपैया फेंक कर, टिकट लाटरी लेय,
छप्पर घर पर न हो तो, छत्त फाड़कर देय।

बलीराम धर्मानी, रायपुर (म. प्र.)

प्र० : काकाजी, आप हमसे प्यार करते हैं या नफरत ?

उ० : नफरत से नफरत हमें, प्यार-इश्क से शर्म,
दीवानों को हँसाना, काका कवि का धर्म।

हरजोन्दर सिंह रिखराज, जमशेदपुर

प्र० : हमारे देश की धरती हीरे-मोती उगलती है तो जनता भूखी क्यों मरती है ?

उ० : किसी किसी पर बीस साड़ियां, नहीं किसी पर धोती,
हीरे-मोती मंत्री चाबें, जनता भूखी रोती।

कैलाशचन्द्र बरवालिया, देहरादून

प्र० : गरीब की ऊंची से ऊंची पढ़ाई भी बेकारी के तूफान से क्यों उड़ जाती है ?

उ० : पढ़े लिखे बेकार हैं, मूरख हैं टिपटाप।
संसद में ही घुस रहे, कई अंगूठा छाप॥
—भाग्य की अद्भुत माया।

अनिल किरन अग्रवाल, टिटलागढ़ (उड़ीसा)

प्र० : विज्ञान के बढ़ते चरण, मानव के लिए आशीर्वाद हैं य अभिशाप ?

उ० : अणु विस्फोटी होड़ का, आता है जब ध्यान।
लगता है, विज्ञान को, निगल जाय विज्ञान॥

अपने वाक्य केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।	काका के कारतूस दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

परोपकारी



ऐ बच्चो! लड़ना बन्द करो।
लड़ाई इसने शुरू की थी.
नहीं अंकल इसने मेरा रूमाल चुराया है।
लड़ाई बन्द करो और ठीक से बताओ बात क्या है?
ंकल मैं बताता हूँ, मेरे पास एक
माल है जिस पर 'प' लिखा है, पंकज
हता है कि रूमाल इसका है और
ने चुराया है।
अंकल यह चोर है।
तुम्हें पूरा यकीन है पंकज?
और नहीं तो क्या? इसका नाम रमेश है तो इसके रूमाल पर 'प' कैसे लिखा है। मुझे पक्का पता है कि वह मेरा ही रूमाल है।
नहीं अंकल!
अच्छा अब मेरी बात सुनो।
रूमाल पर 'प' लिखा होने से ही तो नहीं मान सकते कि वह रूमाल तुम्हारा है। अब मेरे रूमाल को ही लो, उस पर भी तो 'प' लिखा है, पर वह रूमाल मेरा है।
अब समझा!
कि आप रमेश की साइड क्यों ले रहे थे? मेरे दो रूमालों में से एक-एक रूमाल आप दोनों लेकर बैठे हुए हैं।
हे राम!
THE NATIVE

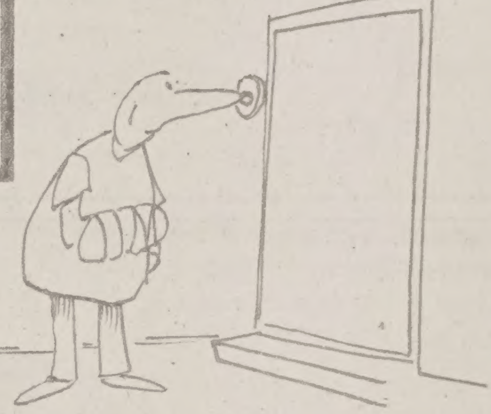
त-बे-बात की



ना है तुम्हारी शादी एक
ल्म निर्देशिका से हुई है।
र उसके निर्देशन में काम-
भी कर रहे हो?
हाँ उसके निर्देशन में काम जरूर-
-कर रहा हूँ। लेकिन फिल्मों में नहीं, बल्कि घर का चौका-बर्तन आदि!

लम्बी नाक के दीवाने प्रयोग

जी हां, लम्बी नाक मामूली चीज नहीं है इसके कई लाभ हैं। लम्बी नाक अपने मालिक की कई प्रकार से सहायता करती है। कई काम आ सकती है। जरा इस फीचर को को पढ़ कर देखिये !



हाथ जख्मी हों तो नाक से दरवाजे का कॉलबेल बजाया जा सकता है।



लम्बी नाक वाले की नाक कटे तो उतनी बेइज्जती नहीं होती। कितनी भी कटे कुछ न कुछ बचा ही रहेगा।



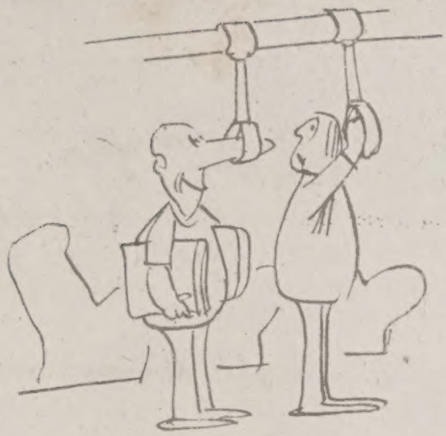
दो लम्बी नाक वाले मिलें तो हाथों को तकलीफ नहीं देनी पड़ेगी। नाक मिलाने से ही काम चल जायेगा।



पतीले में खाना पकते समय सूंघना हो तो लम्बी नाक के कारण आसानी रहेगी। मुंह भाप से झुलसेगा नहीं।

कभी नाक से जमीन पर लकीरें खेंचने की नौबत आये तो गर्दन को ज्यादा नीचे नहीं झुकाना पड़ेगा।





दोनों हाथ सामान के कारण बंधे हों तो भी बस में सफर करने में दिक्कत नहीं होगी। नाक सब संभाल लेगा।



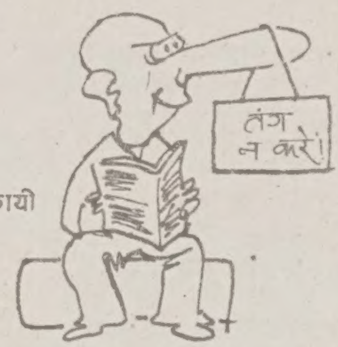
लम्बी नाक दूसरों को पास नही आने देगी। यह तो आप जानते ही हैं कि आजकल जमाना ऐसा है कि किसी को मुंह नहीं लगाना चाहिये।



बेकारी के दिनों में बैलेन्सिग एक्ट दिखा कर रोटी पानी के पैसे कमाये जा सकते हैं।



लम्बी नाक वाले को जल्दी-जल्दी जुकाम पकड़ लेता है। और दफ्तर से छुट्टी मारने का बहाना मिल जाता है।



नाक से सूचना की तख्ती लटकायी जा सकती है।



जानवरों से जल्दी ही दोस्ती हो जाती है। लम्बी नाक वाले को जानवर अपना ही आदमी समझते हैं।



अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

योगेश संघवी जैन—बैरमो : मैंने प्यार में धोखा खाया है। क्या करूं ?

उ०—एक गत्ते पर यह शेर लिखकर अपने गले मे लटकाईये और उस बेवफा के घर के दरवाजे पर धूनी रमाइये :

तुमने वफा न की तो भला क्या हम मर गये,
कहने को बात रह गई दिन तो गुजर गये।

एस० एम० आलमगीर—हजारीबाग : आप चाची से कभी हमारा परिचय नहीं कराते, इससे यह शक होता है आप झूठ बोलते हैं कि आप शादीशुदा हैं।

उ० : चाची देखने की बजाये हमारा सर देखने पर आपको यकीन नहीं आता ?

सलीम अजीज, 'साथी'—गोरखपुर : चाचा जी, आदमी ऊंचाई से गिरता है तो चोट लगती है, पर किसीकी नजरों से गिरता है तो ?

उ० : इसके लिए एक शेर हाजिर है :

हमारे शीश-ए-दिल को सम्भल कर हाथ में लेना,
नजाकत इसमें ऐसी है, नजर से जब गिरा टूटा।

के० पी० श्रीवास्तव—शाहजहांपुर : क्या मनोरंजन के लिए सिनेमा से अधिक महत्वपूर्ण साधन भी कोई है ?

उ० : जो हां, उसका नाम है, प्रोड्यूसर, डायरेक्टर भोलानाथ चिल्ली का बनाया हुआ दीवाना, जिसका मनोरंजन टैक्स सिनेमा के टैक्स से बहुत कम है।

नरेन्द्रकुमार निन्दी—कपूरथला : कहते हैं, झूठ के पैर नहीं होते, क्या यह सच है ?

उ० सब कहने की बातें हैं। हम आपस की बातों में कितना सच बोलते हैं, यह किसी से छुपा नहीं और यह बात हम अच्छी तरह ठोंक करके कह रहे हैं कि हमारे दोनों पैर हैं।

अर्जुनसिंह पंवार, नई सड़क, जोधपुर : इन्सान को अपनी गलती का एहसास कब होता है ?

उ० मरने से पहले कभी नहीं होता इन्सान नाम का जानवर तो भगवान ने बनाया ही इस लिए है कि वह दूसरों की गलतियों का रोना रोता रहे, जैसे जनता पार्टी के बड़े बड़े नेता ऊंची कुर्सियों पर बैठे हैं और अपने ही साथी मन्त्रियों को गाली दे रहे हैं।

प्रदीप कुमार मिश्रा—काशीपुर : संसार में ऐसी कौन सी चीज है जिसकी कीमत नहीं लगाई जा सकती।

उ० : हजार हजार रुपये के नोट जो हमारे पास बंडलों में बंधे पड़े हैं।

चन्द्रशेखर गोस्वामी—हरिद्वार : चाचा जी, आज तक आपने कितने शेर मारे हैं ?

उ० : कोई गिनती नहीं, बेशुमार शेर मारे हैं, आज ही एक सायर की किताब से यह शेर मारा है।

अरे दीवार टूटेगी, न सर को मार यूं कस कर,
भला करता है कोई इस कदर दीवानापन बस कर,



हरीश कुमार 'अमित'—जयपुर : चाचाजी, प्रश्न के उत्तर देते समय आपकी एक उंगली खड़ी ही रहती है क्या इसका कोई राज है।

उ० : जो हां, राज यह है कि जब तक दुनिया में एक भी बेवकूफ मौजूद है, अकलमंद आदमी भूखा नहीं मर सकता।

नन्दलाल—मुठरेजा : दुनिया में अकल बड़ी है या ताकत ?

उ० : यह प्रश्न जितना टेढ़ा है, इसका उत्तर इससे भी अधिक टेढ़ा है, दुनिया में अक्ल ही सबसे बड़ी ताकत है और ताकत ही सब से बड़ी अक्ल है।

जगदीश सिंह बिष्ट—दिल्ली : चाचाजी, मैं फिल्मों में हीरो बनना चाहता हूं इसके लिए कोई आजमाई हुई अच्छी सी तरकीब बताइये।

उ० : आजमाई हुई और सबसे अच्छी और आसान तरकीब एक ही है कि सड़कों पर जूतियाँ घिसाइए। करीब-करीब हर बड़े और सैल्फमेड फिल्म स्टार के बारे में यही कहा है कि इतनी कामयाबी पाने से पहले वह सड़कों पर जूतियां चटखाया करता था।

मुन्ना बाबू विद्यार्थी—कानपुर : क्या हम सच सुना है कि पिछले दिनों सिलबिल से आपकी खटपट रही है ?

उ० : बस इतना ही गलत सुना है कि आपने 'पट' के साथ 'खट' लगा दिया है, सच यह है कि सिलबिल के साथ हमारी पट रही है।

जलील हवारी—गहवा, वीरगंज : क्या सचमुच १९८० में विश्व युद्ध होने वाला है ?

उ० : मैं कोशिश तो यही कर रहा हूं कि विश्वयुद्ध भड़काऊं। बढ़ती आबादी कम करने का और उपाय भी नहीं रहा।

नबीदोस्त शेख—बम्बई : मनुष्य अपना पेट छिपाकर चलता है, तो औरतें अपना पेट खोलकर क्यों चलती हैं, ऐसा क्यों ?

उ० : पुरुष के पेट में बहुत कुछ छिपा रहता है ! औरतों के तो पेट में कोई बात पचती ही नहीं। कुछ छिपाने का सवाल ही नहीं उठता।

मोहम्मद जफर अली—मुरादाबाद : मैं एक लड़की से प्यार करता हूं और उससे विवाह करना चाहता हूं। घर वाले मेरी शादी उससे नहीं करना चाहते। मैं परेशान हूं, बताइए क्या करूं ?

उ० : आप परेशान हैं और वह आपकी परेशानी। बस बने मई जोड़ी ! अब आप रोते क्यों हैं। जैसे राजा और रानी वैसे परेशान और परेशानी।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बन्द करो बकवास



फूल बन जाऊंगा, शर्त यह है मगर अपने जूड़े में मुझको लगा लीजिए।
बन्द करो बकवास बेटा, और यह भी देख लो कि इस परकटी के सर पर जूड़ा है भी या नहीं।
दुनिया ने मुझको है समझा नाकारा... नालायक-नालायक कहके पुकारा...
बन्द करो बकवास, मेरे बेटे की शादी है और तुम ऐसा रेकार्ड चला के बैठे हो, उसकी बदनामी करवानी है क्या।
दुनिया में हम आये हैं तो जीना ही पड़ेगा, जीवन है अगर जहर तो पीना ही पड़ेगा।
बन्द करो बकवास, मैं जानता हूं तुम्हारी चाय जहर से कम नहीं, पर याद क्यों दिलाती हो।



प्रश्न गंज
टी. वी. कार्यक्रम की दीवाना पैरोडी
टी. वी. वालों का प्रश्न गंज कार्यक्रम आपने देखा होगा, इसमें आमंत्रित दर्शकों से विभिन्न विषयों पर प्रश्न पूछे जाते हैं और बाद में पुरस्कार दिये जाते हैं। वास्तव में कार्यक्रम में शहर भर से सबसे कम सामान्य ज्ञान वाले व्यक्ति बुलाये जाते हैं और पुरस्कार भाग लेने वालों से भी ज्यादा घटिया होते हैं। जरा इस बार के पुरस्कारों को देखिये—कागज का २५ पैसे वाला फूल, टूटा कप, छेद वाली प्लेट, बच्चों का झुनझुना और मिट्टी का लोटा। एक टूटी चप्पल भी है जो टेबल के नीचे है।
आप सब मूर्खानन्दों का दिल्ली दूर दर्शन के प्रश्न गंज कार्यक्रम में स्वागत है। आज का हमारा विषय है जानवर। आपको जानवरों से सम्बन्धित प्रश्न किये जायेंगे। सोच समझ कर ठीक-ठीक उत्तर दीजिये और इनाम आपका। तो फिर शुरू हो जायें……।
आज का सबसे पहला प्रश्न है गाय की कितनी टांगें होती हैं? जी हाँ गाय की कितनी टांगें होती हैं? मैं अभी आता हूं आपके पास…लेडीज फर्स्ट!
आई थिंक गाय के थर्टी टू लैग्ज होती हैं आइ एम नॉट श्युअर!
आपका जवाब है गाय के बत्तीस टांगें होती हैं?
गलत गलत गलत! गाय के बत्तीस टांगें नहीं होती! शायद आप अपने दांतों की गिनती बता रही हैं कोई और…
जरा एक मिनट सरदार जी मैं अभी आता हूं आपके पास… आपका हाथ खड़ा है।
मेरे ख्याल में तो गाय की टांगें होती ही नहीं हैं। गाय सांप की जाति का जानवर है।


आपका जवाब सही नहीं है। गाय सांप की जाति का जानवर नहीं है। गाय के टांगें होती हैं आपको यह बताना है कितनी होती हैं···
है कोई और जो इस सवाल का जवाब दे सकता है? आप बहुत पीछे बैठे हैं खैर मुझे आपका हाथ नजर आ रहा है। जरा जवाब ठीक-ठीक बताइये क्योंकि मुझे माइक लेकर इतनी दूर आना पड़ता है। आप इतने जोश में हैं लगता है आपको सही जवाब आता है।
हां तो बताइये गाय की कितनी टांगें होती हैं?
गाय की बहुत टांगें होती हैं। मादर टंग, जर्मन टंग, अंग्रेजी टंग, फ्रेंच टंग, अमेरिका टंग और फादर टंग, चाइनीज टंग वगैरह।
वाह साहब, आपने तो उल्टा ही जवाब दे दिया। सवाल यह नहीं है कि गाय कितनी भाषायें जानती हैं, सवाल टंग का नहीं टांगों का है। कोई और बतायेगा।
अच्छा तो आप ही कोशिश करके देखिये गाय की टांगों की गिनती बताने की।
गाय की दस टांगे होती हैं।
आपका जवाब पूरा सही नहीं है। लेकिन औरों के मुकाबले आप सही जवाब के ज्यादा नजदीक हैं।
क्यों गोबर गणेश साहब, इनका नाम लिख लिया जाये? इन्होंने औरों से ज्यादा सही जवाब दिया है।
लीजिये आपका नाम हमने लिख लिया। आज का इनाम आप जीत गयीं। आपने गाय की दस टांगें बताई! दस नहीं होतीं, चार होती हैं। आप अपना इनाम ले लीजिये।
(नोट—प्रोग्राम में भाग लेने के बाद बाहर निकलते ही इन महिला को पुलिस पकड़ ले गयी। कहा जाता है ये दो दिन पहले पागल खाने से भागी थीं।)

नया धारावाहिक उपन्यास

ठोकर

- लेखिका संगीता

भाग — १२

—वह सोचता बहुत-कुछ पर फिर ठंडा पड़ जाता···मां-बाप का सम्मान और उनके प्रति अपना कर्तव्य ···उसे कुछ कहने से रोक देते···वह केवल अपने भाग्य को कोसकर रह जाता—उसका एक नन्हा भैया प्रमोद परिवार में और बढ़ गया था लेकिन इसकी उसे बिल्कुल खुशी नहीं थी—जिस घर में सन्तान के भविष्य के में बारे नहीं सोचा जाता, वहां सन्तान होना ही व्यर्थ है ।

इन्हीं सोचों और चिंताओं में घिरा हुआ एक दिन वह कमरे में पुस्तक खोले बैठा था ···पढ़ाई में बिल्कुल मन नहीं लग रहा था ···इतने में सरिता आ गई···आजकल वह नियम से रोज आती थी इसलिए कि दसवीं की परीक्षा थी उसकी···विनोद को चिंता में डूबे देखकर बोली—

'मेरा जीवन तो शायद इसी कामना में बीत जाएगा कि कभी विनोद के चेहरे पर शाँति भी देख सकूं ।'

'शाँति तो वातावरण से मिलती है सरिता ···और जिस वतावरण में ही बेचैनी हो, वहाँ शाँति कहाँ से आयेगी ।'

'लेकिन तुम्हारी चिंता और बेचैनी का मूल कारण ही आज तक मेरी समझ में नहीं आया ।'

'घरेलू कठिनाइयां···और क्या ?'

'घरेलू कठिनाइयां तो संसार के हर घर में हैं···जो अमीर हैं उनके घरों में भी और जो गरीब हैं उनके घरों में भी—अमीरों को यह चिन्ता रहती है कि कैसे वह अधिक-से-अधिक सुख-सुविधा के साधन कम-से-कम दामों में जुटाएं और गरीबों को यह चिंता होती है कि उनकी दैनिक आवश्यकताएं कैसे पूरी हों ।'

'लेकिन वह अमीर हैं तो बुद्धिमान···मैं तो यही कहूंगा क्योंकि मैंने अपनी आँखों से पिताजी की जेबों और दादाजी के सन्दूक में हजारों के नोट देखे हैं···लेकिन उन्होंने कभी तुम्हारे बताए हुए अमीरों के समान नहीं सोचा जिसका परिणाम आज हमारे सामने है ···लोग पूंजीपतियों को कंजूस कहते हैं··· मैं तो समझता हूं जो भविष्य के लिए बचाकर रखता है, वह सबसे बड़ा बुद्धिमान है।'

'ठीक है···लेकिन तुम किसलिए चिंता में रहते हो ?

'मैं पिताजी का बड़ा बेटा हूं और उनके बाद घरेलू जिम्मेदारियों मुझी पर पड़ेंगी ।

'लेकिन अभी पिताजी जिंदा हैं और वह संभाले हुए हैं···फिर तुम्हें किस बात की चिंता है ?'

'चिंता इस बात की है कि वह हालात को इतना खराब किए दे रहे हैं कि मुझे डर है जब यह जिम्मेदारियाँ सीधी मेरे सिर पड़ेंगी तो मैं तो पागल हो जाऊंगा ।'

'पागलपन की बातें तो तुम अब कर रहे हो ।'

'क्या मतलब ?'

'कुछ हल सोचा है अब तक ?'

'कुछ समझ ही में नहीं आता ।'

'और फिर भी चिन्ता में डूबे रहते हो, चिंता करने से ही अगर हल समझ में आने लगें तो संसार में कोई समस्या ही न रहे··· और फिर चिंता की ऐसी पुस्तकें निकल आयेंगी जैसी गणित की पाठ्य पुस्तकें होती हैं···हर प्रश्न का अन्त में हल दिया होगा···कुंजियां भी मिल जायेंगी···हर समस्या के लिखित हल मिल जाया करेंगे ।'—सरिता यह सब गंभीरता से कह रही थी लेकिन विनोद को हंसी आ गई—।

'अब चिंता भी न करूं तो और क्या करूं ?'

'कुछ मत करो···बिल्कुल निश्चित हो जाओ···परिस्थितियां हैं बनती-बिगड़ती रहती है···स्वयं संवर जायेंगी ।'

'ध्यान न देने से स्वयं कैसे संवारेंगी, सोचना तो पड़ता ही है ।'

'अच्छा तो बताओ···इतने दिनों से जो निरन्तर चिंता कर रहे हो···उससे कुछ लाभ हुआ ?'

'तुम्हारी बातें मेरी समझ से बाहर हैं ···विनोद ने कहा, चलो, पुस्तक निकालकर पढ़ो ।'

'तुम्हारे राजेश साहब का क्या हाल है सरिता ने बात पलटी ।

'फर्स्ट क्लास बी० एस० सी० के चक्कर में ड्राफ्ट्समैन का कोर्स करना भी छोड़ दिया है ।'

विनोद एकाएक चौंक पड़ा और बोला—

'तुमने आज राजेश की बावत कैसे पूछ लिया···?···मैं आज बिल्कुल नई बात सुन रहा हूं तुम्हारी जबान से···।'

'तुम मेरे दोस्त हो···राजेश तुम्हारा दोस्त है···मैं प्रायः माँ से भी तुम्हारी बातें करती हूं ।'

'राजेश मेरा दोस्त है···क्या तुम्हें विश्वास है ?'

'विश्वास और अविश्वास के चक्कर में मत पड़ा करो···बस, यह देखो तुम्हारे मन में किस दोस्त के लिये कितना स्थान है···यही दोस्ती की सबसे बड़ी कसौटी है···अगर तुम्हारे मन में किसी दोस्त के प्रति अच्छी भावना है तो समझ लो उसके मन में भी तुम्हारे लिए शुभ-चिंताएं ही होंगी ।'

'सरिता, मुझे आश्चर्य है कि तुम अब तक दसवीं कक्षा में ही क्यों हो···तुम्हें तो एम० ए० की विद्यार्थिन होना चाहिए था ···जो बात तुम कहती हो अनुभव से भरी होती है ।

इन्सान की सूझ-बूझ और बुद्धि को डिग्री की कसौटी पर परखने वाले मूर्ख होते हैं । डिग्री से आदमी एम० ए०, बी० ए० जरूर कहलाने लगता है लेकिन उसके मस्तिष्क का विकास तो वहीं तक होता है, जहाँ तक उसकी सामर्थ्य होती है—।'

'ओह भगवान् ! विनोद सिर पर हाथ रख कर बोला—'आज से तुम मुझे पढ़ाया करो ।'

सरिता ने गम्भीरता से पुस्तक खोल ली ।

'मैं इसीलिए तुम्हारी राय को इतना महत्व देता हूं···बिना सोचे-समझे उसे स्वीकार कर लेता हूं···कल तक राजेश के बारे

में असमंजस में था···लेकिन आज से मुझे विश्वास हो गया कि राजेश वास्तव में मेरा दोस्त है क्योंकि राजेश के लिए मेरे मन में सदा शुभ-कामनाएं रही हैं···शायद राजेश के विचार भी मेरे प्रति यही हों।'

विनोद सरिता को पढ़ाने लगा···पढ़ने के बाद सरिता उठकर चली गई···उसके चले जाने के बाद विनोद बड़ी देर तक उसी के बारे में सोचता रहा···और अपनी स्टडी करता रहा···साढ़े नौ बजे राधा चाय की प्याली लिए कमरे में आई और प्याली रखते हुए धीमे स्वर में बोली—

'मां ने बनाई थी···पिताजी के लिए···उनके सिर में कुछ पीड़ा थी···।

विनोद ने एक बार राधा की ओर देखा और फिर पुस्तक पर नजरें जमा दीं···राधा क्षण-भर के लिए रुकी···फिर चली गई, विनोद पुस्तक रखकर चाय पीने लगा···अब वह राधा के बारे में सोचने लगा···उसे राधा और रघु वाली घटना अब भी याद थी, उस घटना के बाद उसने स्वयं राधा से कभी कोई बात नहीं की थी···उसे आवारा लड़कियों से घृणा थी···अगर ऐसा न होता तो वह अपने बचपन के प्यार फूलवती को न ठुकरा देता—।

वैसे भी राधा की हालत चिंताजनक थी···आज से छः महीने पहले जो उभार और ताजगी उसके होंठों पर थी वह लुप्त हो गई थी···अब उन होंठों पर सूखी पपड़ियां जैसी रहतीं···आंखों के नीचे काले गड्ढे उभर आए थे···गाल अंदर को पिचक गए थे···वह अच्छी-खासी सुंदर लड़की थी लेकिन अब उसके चेहरे पर वह मोहनी नहीं थी जो किसी कुंवारी लड़की के चेहरे पर होती है···उसे राजेश की वह बात याद आ गई जो उसने कभी किसी संदर्भ में कही थी कि पाप करने से इन्सान सबसे पहले अपने चेहरे की प्राकृतिक मोहनी खो देता है···और सचमुच राधा अपनी मोहनी अपना आकर्षण खो चुकी थी···उसे राधा के पाप का पूर्ण विश्वास हो गया था—।

दूसरी रात विनोद सरिता को पढ़ा रहा था···उस दिन उसे कुछ देर हो गई थी···लगभग सवा नौ बजे मां ने राधा के हाथ दो प्यालियां चाय की भिजवा दीं···राधा चाय रखकर जाने लगी···सरिता ने केवल एक बार राधा का चेहरा ध्यानपूर्वक देखा और फिर पुस्तक पर नजरें जमाते हुए बोली—

'एक प्याली ले जाओ···मेरा जी नहीं···।'

राधा प्याली उठाने लगी और सरिता ध्यान से राधा के हाथ को देखने लगी···गोरे-गोरे हाथों पर नीली-नीली धमनियां तनी हुई अलग दिखाई दे रही थीं।

'नहीं—आज तो तुम्हें पीनी ही पड़ेगी, विनोद ने सरिता ने कहा।

राधा प्याली छोड़कर चली गई।

'मेरा उद्देश्य तो पूरा हो ही गया···अब पी लूंगी।'

'कैसा उद्देश्य?' विनोद ने आश्चर्य से सरिता की ओर देखा।

'यह लड़की बहुत जल्दी तुम्हारे लिए खतरा बनने वाली है···मां से कहो, इसकी शादी शीघ्र हो जाए तो अच्छा है।

'ओह···!' विनोद आश्चर्य से होंठ सुकोड़कर रह गया, 'तुम्हें इस बात का भी अनुभव है?

सरिता बिना उत्तर दिए चाय पीने लगी···फिर कुछ क्षण बाद बोली···।

'इसकी शादी रघु के साथ ही हो तो बेहतर है वरना व्यर्थ अपमान होगा···बदनामी होगी।

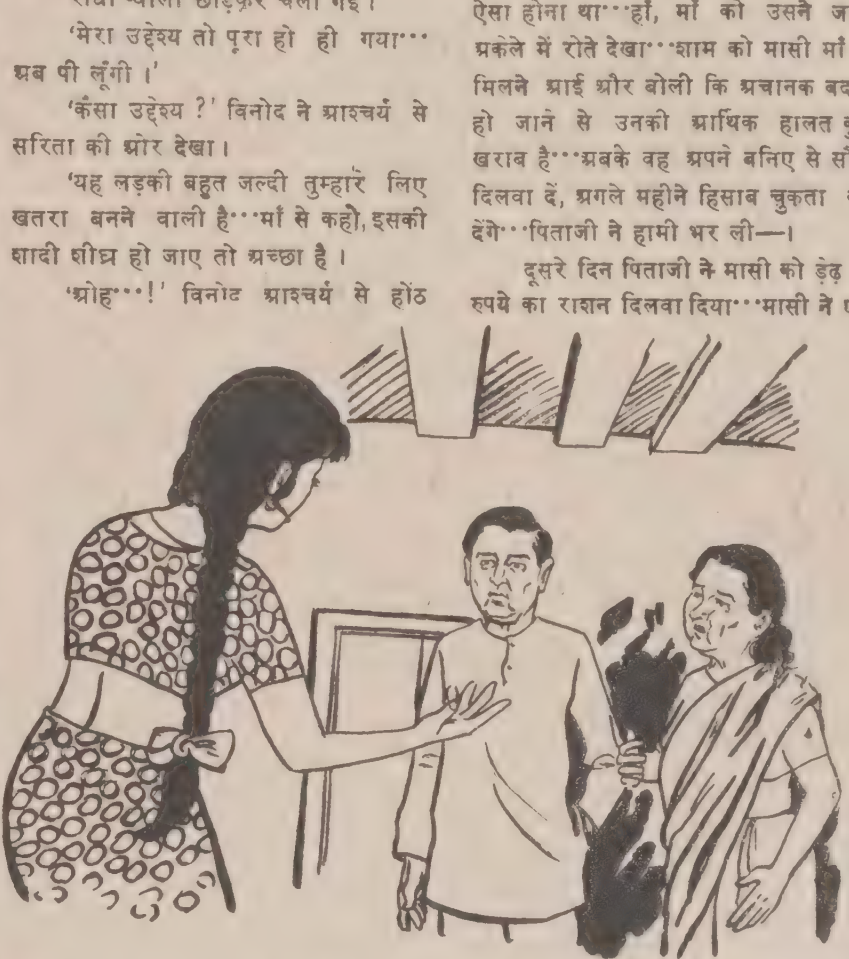
'वह क्यों?'

'घर में रघु के अलावा कोई है नहीं जिस पर सन्देह किया जा सके···वह इस बात पर पर्दा डाल सकता है···वरना दूसरे घरवाले तो चंदिया के बाल भी नोच कर ले जाएंगे जब उन पर बहू की करतूत का भेद खुलेगा···और छिप तो यह सकता नहीं···।

विनोद गहरी सोच में पड़ गया—।

दूसरे दिन एक आश्चर्य जनक सूचना मिली···वह यह कि मासी अपने पति की बदली के कारण इस शहर में आ गई हैं और भाई के घर ठहरी हैं···विनोद को इस पर कोई आश्चर्य नहीं हुआ क्यों कि अब तो ऐसा होना था···हां, मां को उसने जरूर अकेले में रोते देखा···शाम को मासी मां से मिलने आई और बोली कि अचानक बदली हो जाने से उनकी आर्थिक हालत कुछ खराब है···अबके वह अपने बनिए से सौदा दिलवा दें, अगले महीने हिसाब चुकता कर देंगे···पिताजी ने हामी भर ली—।

दूसरे दिन पिताजी ने मासी को ड़ेढ़ सौ रुपये का राशन दिलवा दिया···मासी ने एक



महीने के स्थान पर दो महीने का सौदा भरवा लिया···विनोद सब कुछ देख रहा था और सोच रहा था पिताजी अपनी आदत नहीं छोड़ सकते···उनकी इन बातों पर तो अब सोचना भी मूर्खता है इसलिए जैसा कि सरिता ने कहा, उसे इन समस्याओं पर माथा नहीं फोड़ना चाहिए—लेकिन दूसरी ओर उसे राधा की चिंता थी, सोच रहा था कैसे यह बात पिताजी तक पहुंचाई जाए···इस मामले में जितना भी समय बीतेगा···हानिकारक

शेष पृष्ठ ३५ पर


सिलबिल पिलपिल
सब से बड़ा रुपय्या
थम सोच रहे होगे कि मेरे सामने मेज पर रखे थैले में क्या है ? इस थैले में दुनिया का मामा है । पइशा है, जिसके आगे सब सिर झुकाते हैं । इस साल म्हारे गुड़गांवे में गेहूं की रकाट तोड़ फसल हुई है। साढ़े छः सौ क्विंटल अनाज पैदा हुआ । उसी का पैसा है ।
पूरे साठ हजार रुपये हैं । इसी लिये तो लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा था कि जय जवान जय किसान ।
रु०
अपने रुपयों की थैली को हम अपने कमरे में लट्टू की जगह लटका कर रखेंगे । इसमें बिजली से ज्यादा रोशनी है । इसेदेख ऐसा लगता है जैसे साक्षात भगवान हमारे सिर पर बैठे हमें आशीर्वाद दे रहे हों ।
सर्दियों में यह हीटर का काम करेगा, हमें गर्मी पहुंचायेगा । संगीत के रस में डुबकियां लगायेंगे । क्योंकि सिक्कों की खनकार दुनिया का सबसे मधुर संगीत है । अभी हम बैंक में यह पैसा जमा नहीं करेंगे, कुछ दिन अपने घर में ही रखेंगे जैसे लड़की रहती है, फिर गाजे-बाजे के साथ हम इसे इसके ससुराल बैंक में ले जायेंगे ।
और दूल्हा यानि बैंक पास बुक अपने घर लायेंगे, बारात आयेगी ।
थम इन दोनों की बातों को खाली पीली बूम मत समझना । ये पैसा सचमुच ही बड़े गजब की चीज है । थम जो किताबों में पढ़ते हो कि पैसा कुछ नहीं होता वह सब झूठ है । पैसा ही सब कुछ होता है । थम किताबों के बहकावे में मत आना ।
पैसा हाथ में आये तो किसके दिमाग का पेच थोड़ा-सा ढीला नहीं हो जाता । सभी पैसे के गुलाम होते हैं ।
इब थमारी शादी अचानक टीना मुनीम से हो जाये तो थम भी उसके आगे पीछे कुत्ते की तरह दुम हिलाते नहीं फिरोगे ?


पैसे में इतनी ताकत है कि देखो पहले सिलबिल की मूंछ सफेद होने लग गयी थीं । जैसे ही यह पैसा आया मूंछ फिर से एकदम काली हो गयीं । उसमें से चमक आने लगी जैसे बूट पालिश लग गया हो ।
इसकी चोटी कुम्हलाने लगी थी । जैसे गर्मियों में पौधे कुम्हला जाते हैं । पैसा रूपी पानी मिलते ही वह दोबारा ऐसा खड़ी हुई जैसे त्रिशूल की नोंक हो ।
पिलपिल को देख लो, पैसा आने से पहले सोते में नाक से चींचीं की मरियल सी आवाज निकाला करता था ।
आज ऐसे रुआबदार खुर्राटे मारता है कि जैसे रॉल्स रायस गाड़ी का इंजन चालू हो । आवाज में भी देखो रु० रु० रु० पर ज्यादा हार्स पावर का जोर है । यह कमाल है पैसे का ।
पिलपिल की मूंछें रुपया रूपी तरावट की कमी से सूखे प्याज की जड़ें जैसी हो रही थीं··· बिखर रही थीं···
और आज उन्हीं मूंछों की शान देखो ऐसी नुकीली हो गयी हैं कि गुब्बारा इस पर पड़े तो भड़ाम से फट जाये ।
यह तो भाइयों और बहनों आपने एक छोटा-सा नमूना देखा मनी पावर का । अब आगे इनके बड़े-बड़े करिश्मे देखने को मिलेंगे आप अपना वोट पैसे को ही दीजिये ।


पहले सिलबिल के सपने में केवल आशा सचदेव, पद्मिनी कपिला, लक्ष्मी छाया और रेहाना सुल्तान जैसी पिटी एक्ट्रेसें ही आती थीं। आज जीनत अमान, टीना मुनीम और परवीन बाबी तथा बिन्दिया गोस्वामी के अलावा और सब शन्ट आऊट हो गये हैं। सपने भी सिलवर जुबली मार्का आने लगे हैं।
जो पिलपिल साहब कल तक अखबार के तीसरे पेज पर चोरी, डकैती तथा बलात्कार अपहरण के समाचार पढ़ कर अखबार रख देता था आज वही सबसे पहले अखबार के बाजार भाव वाला पेज सबसे पहले पढ़ता है।
न्यूयार्क रुई में तेजी, लन्दन एक्सचेंज में सोना चढ़ा, मूल्यों में और वृद्धि सम्भावित क्योंकि बजट में कर वसूली तथा व्यय की खाई पाटने के लिये विनिमय बाजार में वित्त विभाग द्वारा मुद्रा पूर्ति में वृद्धि के कारण मुद्रा स्फीति होगी।
लन्दन एक्सचेंज में सोना चढ़ा ? अमृतसर गुरुद्वारे में सोना चढ़ाया गया था अब एक्सचेंज पर भी सोना चढ़ा दिया गया ?
कबाड़ी वाला .....
रद्दी अखबार वाला .....
SSSS!
याद आया। म्हारे पास एक महीने के अखबार जमा हो गये हैं। उन अखबारों को आज बेचना चाहिये कुछ पैसे खट जायेंगे।
घर का खर्च चल जायेगा और हमको थैली नहीं खोलनी पड़ेगी।



पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये ।

सोचिये

५ रुपये जीतिये

चार आदमी चार इच्छायें

चार मनुष्यों को कुछ पैसा दिया गया। पहला इरानी था वह बोला, मैं इससे कुछ अंगूर खरीदूंगा ? दूसरा अरब का था उसने कहा, 'नहीं, मुझे तो ईनाब चाहिए।' तीसरा जो तुर्क था उसने अपनी बात बताई, 'मुझे ईनाब नहीं चाहिये। मैं तो उजलिम लूंगा।' चौथा यूनानी था। उसने अपनी कही, 'मैं केवल स्टॉफल ही चाहूंगा।'

क्योंकि चारों को उन नामों में छिपे अर्थों का पता नहीं था अत: वह अपनी अपनी पसन्द की चीज खरीदने के लिए एक दूसरे से झगड़ने लगे।

एक बुद्धिमान विद्वान उधर से गुजरा। उसने उनकी बात सुनी और हंसकर बोला, 'तुम्हारे पास जो पैसा है उसी से मैं चारों की इच्छा पूरी कर सकता हूं। तुम अपना पैसा मुझे दो ! चारों को उसकी मनचाही चीज मिलेगी।'

उस विद्वान को पता था कि चारों अपनी अपनी भाषा में एक ही चीज 'अंगूर' मांग रहे थे।

सारांश—इस कहानी का सारांश एक वाक्य में लिख भेजिये। सर्वश्रेष्ठ सारांश को पुरस्कार।

अन्तिम तिथि— ३० जून १९७९

पता : दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

परिणाम

—आजाद रामपुरी

मेरे पास बैठा,
एक दर्शक मनचला,
फिल्म के प्रारम्भ में ही,
देखकर उत्तेजक दृश्य,
कुर्सी से यों बोलते हुए उछला—
'लो ये मारा,
और वो मारा।
इसे पीटा,
हाय उसे घसीटा।'
मैंने होकर परेशान,
कहा—'सुनो श्रीमान,
अभी तो फिल्म का प्रारम्भ ही हुआ है,
निर्देशक ने मात्र-भूमिका को—
ही छुआ है।
बीच में जब आयेगी नायिका,
तब,
हिसाब हो जायेगा पाई-पाई का !'
'नायिका आकर क्या-क्या करेगी ?
पूछा उसने जिज्ञाशा बस,
तो मैं चीख कर बोला—
नायिका, अरे वो तो, बिल्कुल नहीं डरेगी,
अन्य पात्रों के साथ-साथ,
तुम जैसे दर्शकों को भी ले मरेगी॥

हा हा हा

● एक चीनी डाकू भारतीय क्षेत्र में घुस आया और डाके डालने लगा। एक बार उसने एक बैंक से दस लाख रुपये लूट लिये। सारी पुलिस पीछे पड़ गयी वह हाथ नहीं आया। अचानक एक इन्सपैक्टर को उस चीनी डाकू जैसा शख्स एक दिन एक जगह दिखाई दिया। इन्सपैक्टर ने फौरन पिस्तौल उसके सीने से गढ़ा दी और पूछने लगा तो पता लगा कि उसे हिन्दी नहीं आती केवल चीनी आती है। इन्सपैक्टर चीनी एक शब्द भी नहीं जानता था। संयोग से पास ही एक व्यक्ति मिला जो चीनी-हिन्दी दोनों जानता था। उसने दुभाषिये का काम करना स्वीकार कर लिया।

इन्सपैक्टर ने दुभाषिये से कहा, इससे पूछो इसका नाम लिंग मिंग है? दुभाषिये ने चीनी से पूछ कर बताया, 'यह कहता है कि इसका नाम हीं लिंग मिंग है।

'इससे पूछो इसी ने पिछले महीने बैंक पर दस लाख का डाका डाला था ?'

दुभाषिया बोला, 'यह कहता है, हां मैंने ही वह डाका डाला था।'

इन्सपैक्टर खुशी से उछल पड़ा, इससे पूछो वह पैसा कहां रखा है वर्ना गोली सीने के आर पार कर दूंगा।

चीनी डाकू के चेहरे पर पसीना आ गया। वह चीनी भाषा में गिड़गिड़ाने लगा मुझे गोली मत मारना। मेरे छोटे बच्चे और बीवी हैं घर में। मैं बता देता हूं कि डकैती का माल कहां छुपा रखा है मैंने। यहां से दो मील दूर पूर्व में एक सूखा कुआं है उसी में सारा पैसा छिपा रखा है मैंने।

इन्सपैक्टर ने दुभाषिये से पूछा, क्या कहता है।

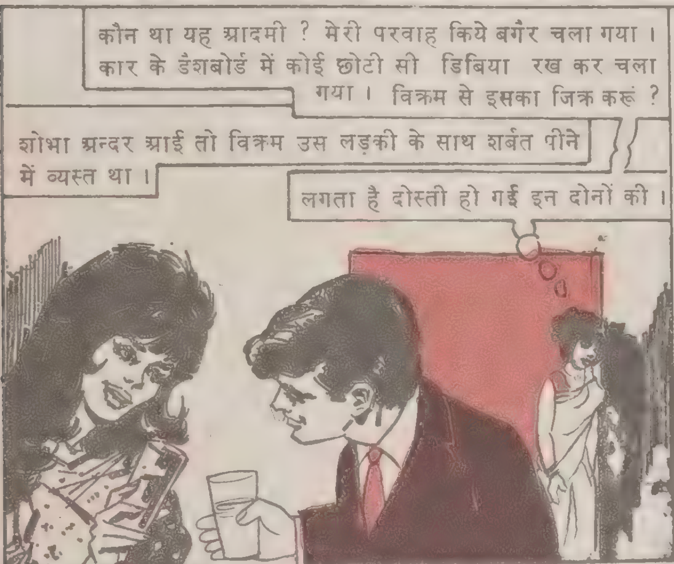
दुभाषिया बोला, यह कह रहा है कि जा! जा! बड़ा आया सीने के आर-पार गोली करने वाला। तेरे जैसे गीदड़ सैकड़ों देखे हैं। तू आदमी थोड़ा है, तू तो भड़वा है। अपनी मां का दूध पिया है तो गोली चला कर दिखा।

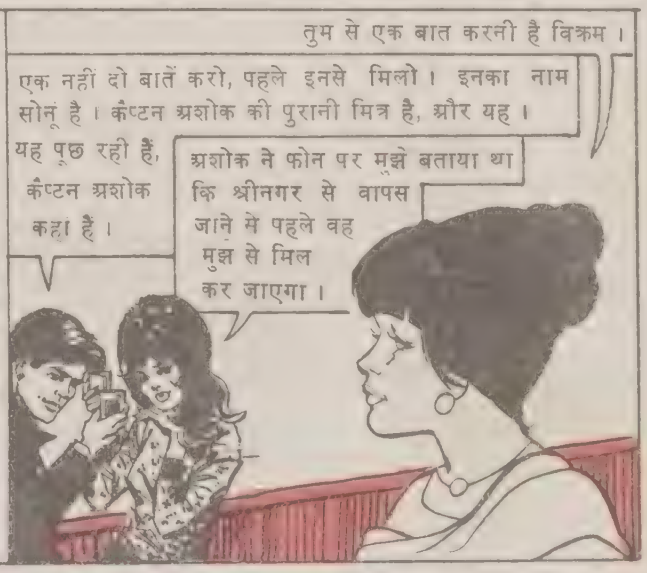
● एक ट्रैफिक पुलिसमैन था, वह हमेशा बूढ़ी महिलाओं की सहायता करता था! एक दिन भारी ट्रैफिक के समय उसने देखा कि सड़क के किनारे खड़ी एक बूढ़ी महिला उसे बुला रही है। उसने चारों तरफ की दर्जनों कारें बस, स्कूटर आदि सब रोक दिये और लपक कर उस महिला के पास गया, 'कहिये।'

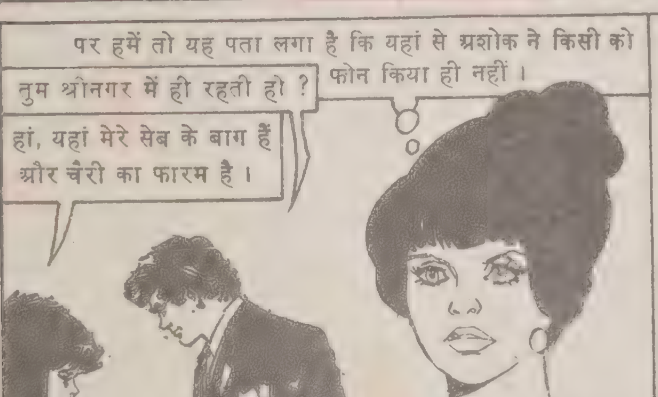
महिला बोली, 'बेटा, मैं तो तुझे यही बताना चाहती थी कि तेरी पेटी पर तेरा जो नम्बर लगा है न वही नम्बर मेरे लाटरी टिकट का है जो अभी-अभी मैंने खरीदा।'

मोटू पतलू

पिछले दिनों कुछ डाकुओं ने अपने एक घायल साथी का इलाज करवाने के लिए मोटू को डाक्टर समझ कर उसका अपहरण कर लिया था, और उसे कश्मीर के पहाड़ों में अपने खुफिया अड्डे पर ले गये थे । वही डाकू फौजी राज स्मगलर करने वाले पाकिस्तानी जासूसों के एजेंट भी थे । उन्हीं दिनों डाक्टर झटका की सेक्रेटरी शोभा की बहन का विवाह कैप्टन अशोक से हुआ था । वे हनीमून मनाने कश्मीर गये थे और लौट कर वहीं आये थे । कैप्टन अशोक के आफिस के लाकर से महत्वपूर्ण फाईल नं० ५५५ गायब थी । इस फाईल में खुफिया फौजी राज थे । डाक्टर झटका, शोभा प्राइवेट डिटैक्टिव विक्रम और चेलाराम छानबीन करते हुए श्रीनगर के उस गैस्ट हाउस में पहुंचे थे जहां कैप्टन अशोक और शोभा की बहन सीमा हनीमून के लिए ठहरे थे । अब तक की पूछताछ से यह अनुमान लगाया गया था कि फाईल नं० ५५५ के कारण कैप्टन अशोक और सीमा विदेशी जासूसों के पंजे में फंस गये हैं, और गैस्ट हाउस के मैनेजर के सलूक से ऐसा लगता था कि इस साजिश में उसका बहुत बड़ा हाथ है । तभी गैस्ट हाउस में एक और सुन्दर लड़की आई थी और कैप्टन अशोक के बारे में पूछताछ कर रही थी । शोभा उस लड़की की कार की तलाशी लेने लगी तो एक खतरनाक हाथ ने बाहर से अन्दर आकर कार का डैशबोर्ड खोला था । उस हाथ पर ड्रगॉन की तस्वीर खुदी हुई थी । इसके बाद की रंगीन जासूसी फिल्म आगे देखिये ।










क्यों ?
पता नहीं, पर तुम्हें यह जानने की इतनी चिन्ता क्यों है ?
मुझे उससे जरूरी काम है ।
क्या काम है ?
कहा न अशोक मेरा पुराना मित्र है, और मित्रों के बीच बहुत सी ऐसी बातें होती हैं जो किसी को बताई नहीं जातीं ।
सीमा मेरी बहन है, दो बहनों के बीच भी तो ऐसी बातें हो सकती हैं जो किसी को बताने योग्य न हों ।
तुम्हारी मर्जी है,
मैं तो मित्रता के नाते बात कर रही थी । मेरे लिये तो जैसा अशोक वैसी सीमा और वैसी ही तुम ।
दर असल अशोक कहाँ है, यह बात······
विक्रम ! अंकल को । बात भूल गये ?
ओह आई एम सॉरी ।
कोई बात नहीं शोभा मैं इसी गैस्ट हाउस में ठहरी हुई हूं । फिर मिलेंगे ।
विक्रम, मुझे यह लडकी पूरी चारसौबीस लगती है । और मैंने इसकी गाड़ी की तलाशी लेते समय एक ऐसा खतरनाक हाथ देखा, जिस पर ड्रागॉन की तस्वीर थी ।
मतलब है, यहाँ कोई गहरी साजिश हुई है । हमें चौकन्ना रहना होगा ।
वहीं चेलाराम और डाक्टर झटका अपनी उधेड़बुन में लगे हुए थे
कोई हम से पूछे, दिल्ली में खोए मोटू को कश्मीर में ढूंढ़ रहे हो, तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है ।
शोभा आपकी सैक्रेट्री है । उसे ना तो हम उसकी बहन सीमा और अशोक को ढूढ रहे हैं । वैसे पुलिस की रिपोर्ट से पता चलता है । कि पिछले दिनों कुछ डाकू कैप्टन अशोक के पीछे पड़े थे । पुलिस से उनकी मुठभेड़ हुई । दो डाकू मारे गये । एक घायल हुआ ।
इसमें मोटू का क्या सम्बन्ध है ? यह कड़ी कहाँ जुड़ती है ?
यह कड़ी कहां जुड़ती है कि घायल डाकू के इलाज के लिए डाक्टर चाहिये । लोकल डाक्टर डाकूओं के अड्डे को और डाकूओं को पहचान लेगा इसलिए बाहर के डाक्टर का अपहर्ण किया गया । मोटू तुम्हारी कुर्सी पर बैठा था इस लिये डाक्टर समझकर उठा लिया गया ।
मतलब है मैं तुम्हारी कुर्सी पर बैठा होता तो मैं उठा लिया जाता ।


दूसरी ओर डाकू अपनी गुफा में अब तक अपनी जिद पर अड़े हुए थे ।
मैं कह रहा हूं, मैं डाक्टर नहीं हूं । मैं डाक्टर की कुर्सी पर जरूर बैठा था । कोई गधा डाक्टर की कुर्सी बैठा होगा
समझ क्या रहे हैं, गधे को उठा कर यहां लाये हैं ।
तो क्या तुम उसे डाक्टर समझ लोगे ?
तुम तो शंकरा का इलाज कर नहीं रहे हो । अब हमें तुम्हारा इलाज सोचना पड़ेगा ।
कंट्रोल रूम में हमारे विदेशी एजेन्टों का वायरलैस सिगनल आया है ।
बात करो, क्या कहते हैं वो ।
कंट्रोल रूम में पहुंच कर सिगनल के जवाब में अपना सिगनल दिया ।
बिप···बिप···बिप ।
किट···किट···किट···!
उधर प्रिंस गैस्ट हाउस में चेला राम की कलाई में बंधी घड़ी के ट्रॉंसमीटर ने वे सिगनल पकड़ लिये ।
बिप···बिप···बिप···
किट···किट···किट···।
मेरी घड़ी में लगे मिनि ट्रांसमीटर ने अजीब से सिगनल पकड़े हैं । लगता है यहां पास ही कोई जासूसों का अड्डा है । मुझे कागज और पैन दो । इनकी बातचीत नोट करूंगा ।
बिप···बिप···बिप···
किट···किट···किट···।
हैल्लो, हैल्लो । दो मुन्ने पांव फिसलने से मर गये । एक मुन्ना की हालत नाजुक है ।


डाक्टर उस मुन्ने का इलाज करने को तैयार नहीं हो रहा है ।
ठीक है, ठीक है । बेकार बातें बन्द करो । ५५५ की सिग-रेट पिलाओ । लैब्चन अनोल लदा दै ? माईक न० माईग, माईग, माईग भकही जेभो ।
?
कोड में बात करने लगे । उल्टे-सीधे शब्द इतनी जल्दी-जल्दी बड़ी कठिनाई से लिखे जा रहे हैं ।
?
मकही जेभेंवे । डाल्चर झचला इकलग नदी लर रहा दै । उसला ल्या लरें ?
उसला झचला लर हो
सिगनल बन हो गये । क्या कह रहे थे यह ?
कोड में कुछ बकवास कर रहे थे । बातचीत तो मैंने नोट कर ली है ।
शब्दों की टाँग मरोड़ कर कुछ का कुछ बोला है । कुछ भी तो समझ नहीं आ रहा है । माथा-पच्ची करके इस कोड की कुंजी पता करनी होगी ।
?
चेलाराम तुरन्त ही शब्दों को उलट-पलट करने में लग गया ।
पहले दो शब्दो लो लैबचन अघोल यह किस चिड़िया का नाम है, लैबचन अघोल ।
चिड़िया का नही चिड़े का तो हो सकता है । वह जो उड़ गया जिस की हम खोज कर रहे हैं ।
तुम्हारा मतलब है मोटू ?
पर मोटू-में ढाई अक्षर हैं । और लैब्चन में साढ़े तीन ।
कैप्टन में कितने शब्द हैं ?
साढ़े तीन ।
और अशोक में ?
साढ़े तीन ।
और अघोल में ?
वही साढ़े तीन ।
तो तुम्हारा मतलब है, लैब्चन अघोल का मतलब है, कैप्टन अशोक । मतलब है, 'ल' को 'क' से बदल दें । 'ब' को 'प' से बदल दें, और इसी प्रकार 'च' को 'ट' से ''न' को न ही रहने दें । 'अ' को अ ही रहने दें । 'श' को 'घ' से 'ल' को 'क' से बदल दें ।
तो लैब्चन अघोल से बना कैप्टन अशोक । अरे इन शब्दों से तो आगे की कुँजी का पता लगाना भी आसान हो जाएगा ।



और वास्तव में चेलाराम ने थोड़ी देर मगजपच्ची करके अब कोड की पूरी कुंजी का पता लगा लिया था।
यह कुंजी बनी है। इन शब्दों को आपस में बदला है। 'क' को 'ल' से और 'ल' को 'क' से! और इस प्रकार बाकी सब को भी। देखो यह कुंजी बनी है।
क:ल ल:क फ:म म:फ प:ब ब:प
श:घ घ:श ट:च च:ट ज:भ भ:ज ह:द द:ह व:ग ग:व
इसके अनुसार, ऊपर के कोड से नीचे की बात निकली।
लैंबचन अनोल लदां, है।
माईक नं० माईग माईग माईग
अकही जैमी। अलही जोंवे। डाल्पर
मचलो इकाम नहीं लर रहा है। असला
लया लरें।
कैप्टन अशोक कहां है? काईल
नं० काईल काईव काईल जल्दी मलो
जल्दी मजेंगे।
डा० मटका इलाज
नहीं कर रहा है। उसका
क्या करें।
उसका मटका
कर दो!
मेरा झटका कर दो? मैं इलाज नहीं कर रहा हूं? हे भगवान। मैंने इसके इलाज को मना किया है? कौन मेरा झटका करने पर तुला हुआ है?
मेरा अंदाजा सही निकला है। कैप्टन अशोक के बारे में भी और मोटू के बारे में भी।
ट्रांसमीटर ने फिर सिगनल देने शुरू कर दिये हैं। इनके ठिकाने का पता लगाने का तरीका यह है कि हम उस दिशा में चलना शुरू कर दें जिधर चलने से सिगनल की आवाज तेज होती जाए।
बिप···बिप···बिप··· किट···किट किट।
एक पल भी गंवाये बगैर चेलाराम और डाक्टर झटका उस ओर भागे जा रहे थे, जिधर भागने से सिगनल की आवाज तेज होती जा रही थी।
बिप···बिप···बिप···
जगल में उन पहाड़ों की ओर से आ रही है आवाज। जब तक सिगनल मिल रहा है, दौड़े चलो।
किट···किट···किट
हैलो, हैलो। बड़ी बुरी खबर है। यह मुन्ना भी मर गया। डाक्टर ने गले में फसी पीपरमैंट की गोली नहीं निकाली। डाक्टर का क्या करें?
उसके गले में पीपरमैंट की गोली फंसा दो।


की गुफा में।
बंदूक की गोली क्या ज़ाया करें इस पर। यहां खून बहेगा तो फर्श धोना पड़ेगा।
अब इसे जंगल में ले जाकर फांसी दे दो।
दो डाकू मोटू को जंगल में बहुत दूर ले आये थे। आंखों पर पट्टी बंधी होने के कारण उसे पता नहीं था कि वह कहां से कहां आ गया है।
पट्टी की गांठ ढीली लगी थी। चलते-चलते एक पेड़ की डाली से उलझी तो खुल गई। मोटू के सामने मौत तो मुंह फाड़े खड़ी ही थी। अपने बचाव की आखरी कोशिश की इच्छा ने उसमें अपार शक्ति भर दी।
आव देखा न ताव उसने एक डाकू पर अचानक हमला कर दिया।
डाकू कहीं जाकर पड़ा और उसकी बन्दूक कहीं। और इससे पहले कि डाकुओं को सम्भलने का मौका मिले, मोटू हाथ बंधे-बंधे ही एक ओर भाग लिया।


अब तक दूसरे डाकू ने उसे समाप्त करने के लिये उस पर छुरे से हमला कर दिया था ।
मोटू भागते-भागते ही अपने बचाव के लिये नीचे झुका तो छुरे की तेज धार से उसके बधे हाथों की रस्सियां कट गई ।
एक डाकू बेहोश पड़ा था । और उसकी बन्दूक दूसरे ने सम्भाल ली थी ।
ज्यादा चालाक बनता है । हाथ बंधे हुये हैं । तो बच कर कहाँ जायेगा ?
लम्बी-लम्बी घास में कब तक छुपा रहेगा ? उधर उसकी गर्दन दिखाई दी और इधर मैंने गोली मारी ।
बच कर गया कहां । यहीं कहीं घास में होगा । कहीं से सरसराहट की आवाज भी नहीं आ रही है ।
मोटू उस पेड़ के पीछे छुपा हुआ था जहां उसे फांसी दी जानी थी ।
अब तक डाकू भी वहां पहुंच चुका था । मोटू को साफ नजर आ रहा था कि डाकू का पांव इस समय फांसी की रस्सी के फंदे में है । मोटू के लिये एक्शन का यह सुनहरी मौका था ।



आगे के हंगामे आगामी अंक में देखिये।

खेल खेल में

अन्याय के शिकार सुरेन्द्र अमरनाथ

सुरेन्द्र को इगलेंड जाने वाली टीम में शामिल नहीं किया गया है, यह चयन कर्ताओं की लज्जाजनक मनमानी है। टीम में गायकवाड़ तथा यजुवेन्द्र सिंह जैसे खिलाड़ियों को लिया गया और सुरेन्द्र को नहीं। सिलेक्टरों की पक्षपातपूर्ण घिनौनी प्रवृति का इससे बड़ा सबूत और नहीं मिलेगा। सुरेन्द्र भारत के बायें हाथ के एकमात्र सलामी बल्ले बाज हैं जो आक्रामक खेल दिखाने से नहीं चूकते। रणजी व दिलीप ट्रॉफी मैचों में भी उनका प्रदर्शन बहुत अच्छा रहा। सुरेन्द्र को किस आधार पर टीम में शामिल नहीं किया गया यह एक पहेली है। सीमित ओवरों वाले मैचों के लिये तो सुरेन्द्र का होना बहुत जरूरी था। अब तो यही कहा जा सकता है कि सिलेक्टरों की लीला सिलेक्टर ही जानें।

जब ब्रैडमैन ने २४ बालों (तीन ओवरों) में शतक बनाया

जी हां, आजकल दो घंटे में शतक बनाने वाले स्वय को फन्ने खां समझने लगते हैं। १६ सौ के चौथे दशक में डान ब्रैडमैन ने कुल तीन ओवरों में सेंचुरी पूरी की थी प्रथम श्रेणी मैच में। स्थान था ब्लैकहोथ आस्ट्रेलिया। शॉटों का क्रम इस प्रकार था।

पहला ओवर—६-६-४-२-४-४-६-१ = ३३
दूसरा ओवर—६-४-४-६-६-४-६-४ = ४०
तीसरा ओवर—०-६-६-१-०-४-४-६ = २७
कुल—१००

सुरेश खुराना पप्पी—जीन्द

प्र० : क्या ऐसा कोई खिलाड़ी है जिसने एक ही मैच में सारी विकेट ली हैं?

उ० : एक इनिंग्ज की सारी विकेटें तो इंग्लैण्ड के जिम लेकर ले चुके हैं। मैच की सारी विकेटें कोई नहीं ले पाया है।

जितेन्द्र कोहली—सीवन

प्र० : भारत के तेज गेंदबाज आलराउंडर हरियाणा के कपिल देव कौन से शहर के रहने वाले हैं?

उ० : चन्डीगढ़।

इन्द्रजीत सिंह मल्होत्रा—रांची

प्र० : मैं क्रिकेट का टैस्ट खिलाड़ी बनना चाहता हूं। कृपया यह बतायें कि इसके लिए मुझे क्या करना होगा? क्या इसके लिए मुझे किसी क्लब संस्था की ओर से खेलना पड़ेगा? यदि हां तो कृपया मुझे उस क्लब या संस्था का स्थान या पता बताने का कष्ट करें। इस समय मेरी उम्र १६ वर्ष की है। मैं इस समय पढ़ता नहीं हूँ। दुकान में बैठता हूँ।

उ० : आप इस सम्बन्ध में अपने शहर से उड़ीसा, रांची की ओर से रणजी ट्राफी में खेलने वाले किसी खिलाड़ी से सम्पर्क करें। जब कभी रांची में मैच हो तो वहां चले जाइये। सम्पर्क करने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

अनिल सी० हरवानी—अमरावती

प्र० : सबसे पहला टेस्ट किस किसके बीच कहां और कब हुआ है? उसका सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी कौन रहा? उसका जन्म कहाँ हुआ है? इसी टेस्ट में सबसे ज्यादा विकेट किसने लिये?

उ० : आस्ट्रेलिया व इंगलैंड के बीच १८७७ में मेलबोर्न में पहला टैस्ट हुआ। आस्ट्रेलिया के चार्ल्स बैनरमैन ने टैस्ट इतिहास का पहला शतक मारा।

गुरमीत सिंह—दिल्ली

प्र० : कृपया मुझे यह बताने कि कृपा करें कि पटियाला में जहां खेलों का संस्थान है उसका पता क्या है?

उ० : पटियाला में नैशनलइन्सटीट्यूट ऑफ स्पोर्टस पटियाला के भूत पूर्व महाराजा के मोती बाग महल में है। लेकिन आप केवल मैं० इन्सटीयूट आफ स्पोटर्स पटियाला (पंजाब) के पते पर भी पत्र भेजें तो पहुंच जायेगा क्योंकि यह राष्ट्रीय स्तर का सबसे प्रसिद्ध खेल संस्थान है?

शक्ति सिंह जायसवाल—दिलशाद गार्डन

प्र० : भारत हाकी में लगातार ७ वर्षों तक विश्व चैम्पियन रहा लेकिन अब वह दिन प्रतिदिन इससे दूर क्यों होता जा रहा है? और इसकी जगह क्रिकेट में बढ़ रहा है। इसका मुख्य कारण क्या है?

उ० : अधिकारियों की धांधले बाजी, खिलाड़ियों से दुर्व्यवहार तथा पक्षपात और हॉकी खिलाड़ियों की उपेक्षा। क्रिकेट की बढ़ती लोकप्रियता काफी हद तक इस खेल के फैशनगेम होने का है। कमेंट्रियां प्रसारित कर तथा टी० वी० पर इसे कवर करके सरकार भी इसे आगे बढ़ाने में खूब मदद दे रही है। क्रिकेट देखना या सुनना आधुनिक फैशनों में से एक बन गया है। क्रिकेट न जानने वालों को आजकल हेय दृष्टि से देखा जाता है। काफी हद तक यह हमारी मानसिक गुलामी का भी नतीजा है।

सुशील कलैया—बारा

प्र० : बहुत पहले से चर्चा थी कि नये क्रिकेट खिलाड़ी को अवसर देना चाहिए और जब कि ऐसा साहसी कदम क्रिकेट चयन समिति बोर्ड ने उठाया तो लोग क्यों इसका विरोध कर रहे हैं जैसे कि आजकल के अखबारों पत्रिकाओं में बेदी, चन्द्रा, प्रसन्ना, महेन्द्र अमरनाथ, सुरेन्द्र अमरनाथ, मदनलाल को टीम में से हटाने के कारण बहुत जबरदस्त विरोध वही लोग कर रहे हैं जो पहले नवोदित खिलाड़ी को टीम में लाने को कह रहे थे, ऐसा क्यों?

उ० : एक मात्र कारण यह है कि एक तो युवा खिलाड़ियों में बहुत कम ऐसे नजर आ रहे हैं जिनमें टैस्ट स्टार बनने की प्रतिभा हो। दूसरी सबसे बड़ी बात यह है कि युवा खिलाड़ियों में भी चयनकर्ताओं का चयन बहुत दोषपूर्ण है। जिनको मौका दिया जाना चाहिये उनकी जगह किसी और को मौका दिया जाता है। उदाहरण के तौर पर इस वर्ष विश्व क्रिकेट कप के लिए यजुवेन्द्र सिंह का चुनाव जबकि उसकी जगह संदीप पाटिल कहीं अधिक ठीक होता?

प्र० : टैस्ट मैच में नये-नये कौन-कौन से खिलाड़ी आ सकते हैं नाम बताने की कृपा करें?

उ० : यह तो चयन कर्ताओं की मेहरबानी पर निर्भर करता है।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

जूडो कैराटे कैसे सीखें ?

घूंसे का प्रयोग

कैराटे में आत्म रक्षा के लिए या आक्रमण करने के लिए घूंसे का उपयोग मुख्य रूप से होता है। लेकिन याद रखें कि इस घूंसे का उपयोग उस ढंग से नहीं होता है, जिस ढंग से बाक्सिग के खेल में होता है। कैराटे के खेल में घूंसा एक विशेष प्रकार से बनाया जाता है और विशेष प्रकार से ही इसका प्रहार भी किया जाता है। इसीलिए घूंसे बनाने का तथा मारने का निरन्तर अभ्यास करना आवश्यक है।

कैराटे में घूंसे का प्रहार एकदम तीर की तरह सीधा विरोधी के पेट या छाती पर करना होता है।

आक्रमण की आशंका होते ही तुरन्त 'T' आकार की पोजीशन में आ जाना चाहिए। खड़े होने की स्थिति भी लगभग 'T' आकार जैसी ही होती है। मुट्ठी का मुंह अर्थात् हथेली के पीछे का भाग विरोधी के शरीर के सामने होना चाहिए।

जब आप शत्रु पर आक्रमण करें तो दायें पैर और दाईं भुजा को आगे की ओर लायें और बायें हाथ की मुट्ठी को कसकर बांधें। दायें पैर पर पूरे शरीर का वजन डालते हुए झटके से आगे बढ़ें और बाईं मुट्ठी का प्रहार विरोधी के पेट या पसली के नर्म भाग पर करें।

मुट्ठी बांधते समय हमारी उंगलियों की हड्डियों का सबसे अधिक उभरा हुआ भाग शत्रु के कोमल स्थान पर लगना चाहिए, अंगूठे के बाद वाली पहली और दूसरी उंगलियों का हड्डी वाला भाग ज्यादा उभरा हुआ होता है। मुट्ठी का यह उभरा हुआ भाग शत्रु की छाती या पसलियों के जोड़ के स्थान पर मारा जाता है। याद रखें यदि आपके प्रहार को शत्रु रोक ले या बचा ले तो बिना देर किए तुरन्त दूसरे हाथ के घूंसे का इस्तेमाल कर दें और तुरन्त अपनी पहले की स्थिति में आ जाएं। घूंसा मारते समय इस बात का खास ख्याल रखें कि जितनी तेजी व फुर्ती से घूंसा मारा जाये उतनी ही फुर्ती से अपने हाथ को अपनी ओर वापस भी खींच लेना चाहिए, ताकि शत्रु की पकड़ से आपका या आपके हाथ का बचाव हो सके।

चाहे आपका दुश्मन आपसे ऊँचा हो या हट्टा कट्टा, भारी भरकम हो—आपका घूंसा यदि अभ्यास द्वारा मजबूत व कठोर बन चुका है और उसका प्रहार दुश्मन के पेट या छाती के नर्म भाग पर हो चुका है तो कोई कारण नहीं कि दुश्मन धराशायी न हो जाए।

उंगलियों का प्रयोग

कैराटे खेल में उंगलियों के प्रहार का भी अपना एक विशेष महत्त्व है। उंगलियाँ हाथ का सबसे कोमल भाग हैं इसलिए इन्हें अभ्यास द्वारा मजबूत बनाया जाना भी आवश्यक है। उंगलियों के अभ्यास के बारे में हम पहले ही बता चुके हैं। प्रहार की दृष्टि से हमारे हाथ की अंगूठे के पास वाली दो उंगलियाँ ही सर्वोत्तम हैं।

एक उंगली का प्रहार

एक उंगली का प्रहार करना सरल भी है और प्रभावशाली भी। एक उंगली का प्रहार प्रायः अंगूठे के बाद वाली पहली उंगली से ही किया जाता है। इस उंगली को सीध में खड़ा रखा जाता है तथा बाकी उंगलियां मोड़कर मुट्ठी बना ली जाती है। इस उंगली का प्रहार तीव्र गति से विरोधी की आँख पर अथवा पसलियों के जोड़ पर किया जाता है। शत्रु का ध्यान बँटाने के लिए यह एक प्रभावशाली प्रहार है। यह आसान प्रहार कैराटे सीखने वाली स्त्रियों के लिए उपयोगी तथा कारगर है।

दो उंगलियों का प्रहार

दो उंगलियों का प्रहार करने के लिए प्रायः अंगूठे के बाद वाली दोनों उंगलियों की मदद से ही किया जाता है। दो उंगलियों का प्रहार करने से पहले उंगलियों को अंग्रेजी अक्षर 'V' के आकार की तरह बना लेना चाहिए। इन दोनों उंगलियों को सीधा तानकर बाकी उंगलियों को मुट्ठी के रूप में मोड़ लेना चाहिए। इससे पहले कि शत्रु आप पर कोई घातक प्रहार करे—फुर्ती से 'V' आकार में तनी इन दोनों उंगलियों को शत्रु की दोनों आंखों में घुसा देना चाहिए। चूंकि यह प्रहार भी सरल एवं कारगर है। इसीलिए कैराटे सीखने वाली स्त्रियों को यह दाव अच्छी तरह सीख लेना चाहिए।

एक बात याद रखें, उंगलियों के प्रहार का उपयोग तभी करें, जबकि आप उंगलियों को अभ्यास द्वारा मजबूत व कठोर बना लें। यदि आपने उंगलियों को मजबूत नहीं बनाया है तो इनके द्वारा प्रहार करने से आपको हानि भी उठानी पड़ सकती है।

उंगलियों की गांठ का प्रहार

इस प्रहार के लिए हाथ की मुट्ठी बाँधकर सबसे बड़ी वाली उंगली को थोड़ा ऊपर की ओर ही उठा रहने दिया जाता है, ताकि उंगली के जोड़ की गाँठ बाहर की ओर निकली रहे। इस गांठ का प्रहार विरोधी की गर्दन, पसलियों के जोड़ के स्थान पर, ठोड़ी तथा चेहरे के नर्म स्थान पर किया जाता है। आप विश्वास मानें या न मानें, यदि सही ढंग से आपने इस गांठ का प्रयोग विरोधी के शरीर के किसी भी नर्म स्थान पर किया है, तो निश्चित रूप से वह तिलमिला उठेगा।

कैराटे चाप का प्रहार

'कैराटे चाप' के बारे में थोड़ा-बहुत हम आपको पहले भी बता चुके हैं। हथेली की सबसे छोटी उंगली के किनारे वाले भाग (छोटी उंगली के सिरे तक जहां से कलाई शुरू होती है वहाँ तक का बगल का धारदार भाग।) को ही 'कैराटे चाप' कहा जाता है। 'कैराटे चाप' का प्रहार विरोधी के कमजोर और कोमल स्थानों पर ही किया जाता है। आपको हम अभ्यास वाले अध्याय में बता चुके हैं। टेबिल पर पत्थर की पट्टी रखकर उस पर कम्बल या घास फूस की तहें जमाकर हथेली के इस धारदार हिस्से को मार मारकर किस प्रकार मजबूत व ठोस बनाया जाता है। निरन्तर अभ्यास करते रहने से हथेली का यह धारदार किनारा इतना सख्त हो जाता है कि चाकू छूरी जैसी धारदार वस्तु पर हथेली का यह किनारा लग जाने से हाथ नहीं कटता।

क्रमशः

● श्री चन्द्र की बीबी पेटू और मोटी थी। एक दिन चन्द्र जी ने डाइटिंग का सुझाव दिया तो बोली 'मैं भूखी मर जाऊंगी लेकिन डाइटिंग नहीं करूँगी।'


फैणटम
की पत्नी
डियाना का अपहरण
लड़की कटघरे में से कैसे निकली ?
अजीबो-गरीब चीज है, ताला टूटा हुआ था, किसी को पता नहीं।
दोनों को जल्दी ढूंढो।
देखो··· नया चांद।
शुक्र है पूरा नहीं है, ज्यादा रोशन नहीं है।
चुप।
!
रात को।
?!
तारा कीमो महल में।
जनरल तारा।
अ र्रर्रर्र
जनरल अन्दर सो रहा है, यहां रुको, मैं डेविल के साथ जाता हूं।
!
क्या पता चला वह लड़की कैसे भागी।
और ताला कैसे तोड़ा।
किसी को पता नहीं है
खर्रर्रर्रर्र
बुरे आदमी के लिये रात के अन्धेरे में जागना और फंण्टम को देखना बहुत भयानक चीज···पुरानी जंगल की कहावत है।
हि च च।





शीर्षक प्रतियोगिता

10रु० जीतिये

इस कार्टून का आप उचित शीर्षक बनाइये और पुरस्कार जीतिये ।

अन्तिम तिथि ३०जून १९७८

इस बारे में पाठकों के दिल में शक रहता है । अतः हम स्पष्ट कर दें कि हम दोनों प्रकार के शीर्षक स्वीकृत करते हैं और समान रूप से उन्हें प्रतियोगिता में शामिल करते हैं ।

शीर्षक प्रतियोगिता
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

क्यों और कैसे

प्र० : क्रिकेट का खेल कब और कहाँ आरम्भ हुआ था ?

मोली मान पति—नैपाल गंज

उ० : अनुमान लगाया जाता है कि क्रिकेट इंगलेंड में पांचवीं शताब्दी में आरम्भ हुआ होगा जबकि इस खेल के वहाँ खेले जाने का पूरा विश्वास है। पुराने समाचार पत्रों में क्रिकेट के विज्ञापन सन् १७०० के लगभग मिलते हैं। सबसे पहला काऊंटी क्रिकेट का रिकार्ड किया हुआ मैच सन् १७१६ में खेला गया था। सन् १७५० से पहले पिच की लम्बाई २२ गज तय की गई थी। खेल स्टम्प पर दो विकेट से खेला जाता था। जो कि २२ इंच ऊंची तथा ७ इंच चौड़ी होती थी अनुमान है कि इस समय बल्ले के नाप पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था। इस कारण इस समय का बल्ला आधुनिक बल्ले से मिलता जुलता न था। इन दिनों वस्त्रों पर भी विशेष रोक न थी और खिलाड़ी सफेद कमीज, ब्रीचिस तथा लम्बी जुराबें पहने, तरह-तरह के टोप पहने देखे जाते थे।

क्रिकेट के इतिहास में सन् १६५० में स्थापित हैम्बलडन क्लब का विशेष महत्त्व है। हालांकि हैम्बलडन हैम्पशायर में एक छोटा सा गांव ही था फिर भी इसके खिलाड़ियों ने सारे इंगलेंड की मिली-जुली टीम को हरा कर तहलका मचा रक्खा था। गेंद हाथ के नीचे से फेंकी जाती थी परन्तु फील्ड की जमावट तथा विकेट की रक्षा करने के कार्य में बहुत जल्दी प्रवीणता प्राप्त हो गई थी।

इंगलेंड में लार्डस का ऐतिहासिक क्रिकेट मैदान सन् १७८१ में ही खुल गया था। आज भी ये मैदान वहीं है जहाँ इसे सन् १८१४ में बनाया गया था, इसी मैदान में मेलबोर्न क्रिकेट क्लब 'एम० सी० सी०' की शुरुआत हुई थी। ये क्लब सन् १७८८ में आरम्भ हुआ था और क्रिकेट के खेल का सबसे प्रभावशाली नियन्त्रण भी यहीं आरम्भ हुआ। सन् १८०० के आरम्भ में ही विकेट की ऊंचाई २७ इंच तथा मोटाई ६ इंच तय कर दी गई थी। इस काल में बल्लेबाज गेंद फेंकने वाले से अधिक फायदे में था। इसके बाद ही सन् १८४० में गेंद को घुमा कर फेंका जाना आरम्भ हो गया। ऊपर से गेंद फेंकना भी बाद में ठीक समझा जाने लगा।

क्रिकेट के टैस्ट मैच खेलने सन् १८७७ में शुरू हुए। इन दिनों दूसरे देशों में जाकर खेलने वाली इंगलिश लिलिव्हाईट की टीम को आस्ट्रेलिया की मिली-जुली टीम ने हराया था। इंगलेंड में टैस्ट मैच सन् १८८० से खेलने शुरू हुए थे। युद्ध के वर्षों के अतिरिक्त यहाँ अभी तक हर वर्ष टैस्ट मैच खेले जाते हैं।

> एक क्लर्क रोज दफ्तर लेट जाता था। अन्तिम चेतावनी देने के उद्देश्य से अफसर ने उसे बुलाया और कहा, 'आज मैं तुमसे आखिरी बार कह रहा हूं…।'
>
> क्लर्क—'क्यों साहब आप यह नौकरी छोड़ रहे हैं ?'

प्र० : लेसर किरणें क्या होती हैं ?

जितेन्द्र नारायण त्रिपाठी, गोरखपुर

उ० : लेसर एक ऐसा उपकरण है जिसके द्वारा अपेक्षाकृत कम चमक तथा घनत्व के प्रकाश को बहुत अधिक तीव्र शक्ति की किरण या बीम के समान फेंका जा सकता है। लेसर बीम इतनी शक्तिशाली होती है कि इसके द्वारा कठोर धातुओं में भी छेद किये जा सकते हैं। लेसर बीम की सहायता से रक्तपात-हीन आपरेशन किये जा सकते हैं, इन आपरेशनों में आंखों का आपरेशन विशेष उल्लेखनीय है।

एक प्रकार के लेसर उपकरण में बनावटी चुन्नी के क्रिस्टल को घुमावदार या 'कोयल' बनाये हुए गैस छोड़ने वाले लैम्प या "स्ट्रिप लाइट" से घेर दिया जाता है। ये प्रकाश चुन्नी के भीतर लाल रंग उत्पन्न करने वाली कुछ अशुद्धियों के अणुओं द्वारा ग्रहण कर लिया जाता है। इसके बाद एक शक्तिशाली विद्युत चुम्बक की सहायता से इन अणुओं को एक दिशा में लाया जाता है। फिर ये अणु ग्रहण किये हुए प्रकाश को एक बारीक शक्तिशाली बीम के रूप में छोड़ते हैं जिसका संकेत अणुओं की दिशा की ओर होता है इस प्रकार के लेसर उपकरण द्वारा फेंकी गई बीम बहुत शक्तिशाली होती है। इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि आधुनिक प्रयोगों में ऐसी बीम को चन्द्रमा तक फेंका जा चुका है।

प्र० : पानी पर बत्तख की किस्म के पक्षी किस चीज की सहायता से तैर लेते हैं जबकि उड़ने वाले अन्य सभी पक्षी ऐसा करने में असमर्थ होते हैं ?

अनिल कुमार अग्रवाल—कानपुर

उ० : बत्तख या बत्तख की किस्म के पक्षियों से हमारा तात्पर्य अनाज के खलिहानों में घूमने वाले पक्षियों से लेकर जंगली प्रकार के लम्बी यात्रा करने वाले तथा हंस, सारस, बगुले, मछली पकड़ने वाली बत्तखें, गोताखोर बत्तख इत्यादि सभी से है। अधिकतर जंगली बत्तखें केनेडा के सीमावर्ती राज्यों से लेकर दूर-दूर उत्तर तक पाई जाती हैं। केवल शीतऋतु में ही बत्तखें मध्यवर्ती तथा दक्षिणी राज्यों की ओर चली जाती हैं, परन्तु ये बत्तखें दक्षिण में केवल तभी तक रहती हैं जब तक उत्तर में बर्फ पिघलनी आरम्भ नहीं होती। बर्फ पिघलते ही ये पक्षी पोखर, तालाब, सागर तटों तथा नदियों इत्यादि के अपने घरों को लौट जाते हैं।

बत्तखों को बर्फीले पानी में रहने में कोई कठिनाई नहीं होती क्योंकि इनके परों के घने कोट के नीचे तेल ग्रन्थियां होती हैं जिनसे निकले तेल के समान तत्त्व के कारण पर पानी से नहीं भीगते तथा बत्तखें पानी में आनन्द से तैरती रहती हैं। इनकी पूंछ के पास भी तेल ग्रन्थियां होती हैं जिनसे निकला तेल हर समय परों पर फैल कर इन्हें चिकनाता रहता है।

इन परों के कोट के नीचे कोमल रोयें की मोटी तह होती हैं जो पानी में इनकी ठंड से रक्षा करती हैं, इनके जाल युक्त पैर भी बर्फीले पानी में इनकी सर्दी से रक्षा करने में सहायक होते हैं। इनके इन जालयुक्त पैरों में रक्त तथा रक्त नाड़ियां नहीं होतीं और इस कारण बर्फीले पानी में भी इनके पैर सर्दी महसूस नहीं करते। इनकी ऐसे ही सहायता करते हैं जैसे नाविक की नाव चलाने में चप्पू करता है।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



फिल्मी शीर्षक ऐसे भी फिट होते हैं।
A
BOMB
आंधी
बदलते रिश्ते
नसबन्दी
कैम्प
कर्तव्य
खोटे
सिक्के
बाल
बाल
खून
की
पुकार
रक्त दान
केन्द्र



हमारे तुम्हारे
सम्बन्धियों पर भ्रष्टाचार के आरोप
चोर हो तो ऐसा
आयकर
जानी दुश्मन
अनजाने में
हमारा संसार
खून का बदला खून

इंटरव्यू ???

—डा० प्रेमचन्द गोस्वामी

इंटरव्यू आधुनिक युग की मौलिक देन है जिसका शाब्दिक अर्थ है—साक्षात्कार। क्योंकि इसका अर्थ शब्द मूल शब्द से कठिन है, अतः इसकी चर्चा करते समय हम इंटरव्यू शब्द का ही प्रयोग करेंगे।

इंटरव्यू के व्यापक प्रचार के दौरान अपनी दिलचस्पी इसमें तब जगी जब घर के खर्च-बोझ से घबराकर हम नौकरी तलाशने में लगे हुए थे। इन दिनों हमें एक दफ्तर से 'इंटरव्यू' के लिए कार्ड मिला। हमारा बस चलता तो हम इस पचड़े में कभी न पड़ते किन्तु जब देखा कि 'इंटरव्यू' दिये बिना ना तो हम सरकारी नौकरी पा सकते हैं और न गैर सरकारी, मजबूरन हमें इन्टरव्यू फंस करने का निर्णय लेना पड़ा। घर में पूंजीराम जी के अभाव ने हमारे स्वभाव में एक खास बदलाव ला दिया था।

हम हर सुबह पचास दण्ड पेलते और एक सौ बैठकें लगाते। नियम से शरीर मालिश करते और दूध पीते। एक दिवस हमारे एक हितचिंतक ने हमें बताया कि 'इन्टरव्यू' देने के लिए शरीर की तैयारी उतनी जरूरी नहीं, जितनी दिमाग की तैयारी जरूरी है। हमने उनकी सलाह मानकर दण्ड पेलना छोड़, सर पर बादाम के तेल से मालिश करवाना शुरू कर दी। लेकिन जब उन्होंने बताया कि 'इन्टरव्यू' की कार्यवाही में दो तीन अजनबी आदमी हमसे कोई भी ऊलजलूल सवाल कर सकेंगे तो हमें इससे चिढ़ होने लगी। हमने देखा कि यह चिढ़ हमारे लिये खतरनाक सिद्ध होगी तो अपने मस्तिष्क की सतह पर अक्ल की रोशनी डाल कर चीजों को देखना शुरू कर दिया। असल चीज साफ नजर आने लगी। हमने पाया कि यह हमारा दिमागी भय था कि जाने 'इन्टरव्यू' में किस बला से सामना करना पड़े, पता नहीं किस शैतान की सामनागोई हो, जिससे नजात पाना बेहद जरूरी था। हमारे लाख कोशिश करने पर भी भय का यह भूत हमारे दिमाग की कोठरी से बाहर नहीं निकल सका था। हर रोज डरावने ख्यालात उसमें उपजते रहते। यहां तक कि खांसी, जुकाम बुखार, हैजा, मलेरिया, दस्त और पेचिस सब बीमारियों ने एक साथ हमें आ घेरा। इससे पहले कि हम खाट पकड़ लेते, अपने राम के उपजाऊ दिमाग की देहरी पर खर्राटे भर रहा बीसवीं सदी का जिन अचानक पास होने का नुस्खा देकर छू मंतर हो गया। यह नुस्खा था सिफारिस का। सिफारिशी घोड़े पर बैठकर 'इन्टरव्यू' नामक नदी से शान के साथ पार करने का।

हमने अपनी कौड़ी सी आंखों को पूरा खोलकर एक बार उन्हें समूचे ब्रह्मांड की सैर करायी। 'जैक' की तलाश में फिर रही हमारी प्यासी आंखों को शीघ्र ही अपना प्रेम पात्र मिल गया। इन्टरव्यू रूपी भवसागर से बेरोकटोक पार करा सकने वाला खेवनहार बना हमारे चाचा के साले साहब का जिगरी दोस्त, जो इस इन्टरव्यू में हमारी बखिया उधेड़ने वालों में से एक था। अब क्या था। हमने आव देखा न ताव-जल्दी से सोर्स भिड़ाकर उनके नाम सिफारिशी पत्रों का एक बंडल लेकर उनके पास पहुंच गए। उनके दरबार में पहुंचने पर पता चला कि ये श्रीमान बड़े उस्ताद हैं। हमसे सिर्फ इतना कहा—'इन्टरव्यू' दो और देखो क्या होता है?'

हमें लगा जैसे आसमान से यकायक जमीन पर आ गिरे हों। सिफारिशी पत्रों का बंडल दिखा देने के बाद भी हमारे शैतान दोस्त को इन्टरव्यू के 'जिन' ने धप्प से जमीन पर दे मारा था। किन्तु हमें याद है पिछले जन्म में हमारे दादा मरहूम कहा करते थे—'बेटा हर चीज हार जाओ पर हिम्मत मत हारो।' उस जन्म की यह इकलौती बात आज ताजा होकर हमें कुरेद रही थी। हम हिम्मत बांधकर बाज़ार गए और 'वन डे गाइड टू एन इन्टरव्यू' नामक पुस्तक खरीद लाए। एक दिन मैं अपने आपको इन्टरव्यू के लिए तैयार करके सफलता पाने का अब यही तरीका हमारा सहारा था।

आखिर वह घड़ी भी आ पहुंची जब हमें इन्टरव्यू देने जाना था। खुदा का शुक्र था कि अपना नम्बर तेरहवां था। यानि बारह लोगों की दिमागी हजामत के बाद अपनी बारी थी। उस समय इन्टरव्यू के लिये आया हुआ प्रत्येक व्यक्ति हमें अपना पीढ़ी दर शत्रु नजर आ रहा था। हम शत्रुओं से घिरे चुपचाप बैठे अपने नाम की प्रतीक्षा कर रहे थे।

प्रत्याशियों को बुलाया जाना शुरू हुआ। कमरे के बाहर घंटी बजते ही हमें ऐसा लगता जैसे अपने सर पर हथौड़े चल रहे हों। हमने देखा कि इन्टरव्यू देकर आने वाले हर शख्स की शक्ल ऐसी हो रही थी जैसे कहीं से पिटकर आया हो। हमें जब उनसे पूछे गये प्रश्नों का पता लगा तो हमारे तोते ही उड़ गए। फिर भी हम दुम दबाए एक कोने में दुबके रहे।

आखिर हमारा नम्बर भी आया। हम काली कलकत्ते वाली का स्मरण करके कमरे में दाखिल हो गए। अन्दर देखा तो हमें यकायक चक्कर आ गया।। आंखों के सामने अन्धेरा घिरने लगा और हमारे पांव थर-थर कांपने लगे। कारण यह था कि सामने की किसी कुर्सी पर हमें अपने चाचा के साले साहब के दोस्त नजर नहीं आए। उनकी कुर्सी बिल्कुल खाली पड़ी थी।

कुछ क्षणों तक आंखों के सामने वही धुंधलका छाये रहा। हमें होश आया तो हमने उन्हें कुर्सी पर विराजमान पाया। असल में वे लघुशंका निवारणार्थ चले गए थे। हमारी जान में जान आई और उनके आग्रह पर हम अपनी कुर्सी पर बैठ गए।

उन महाशय ने हमें छूटते ही पूछा—('शायद इस लिहाज से कि कहीं उनका कोई दूसरा साथी हमसे कोई भारी भरकम सवाल न पूछ बैठे') क्यों भैया? आजकल बाजार में चीनी किस भाव मिल रही है?

हम चुप थे। यह प्रश्न न तो हमने 'गाइड' में देखा था और ना ही हमारी जनरल नालेज के घेरे में आता था। हमें तो इसका अन्दाज भी नहीं था। क्योंकि असल में हमारे घर की जरूरत की सभी चीजें बाजार से हमारी माननीय माताजी खरीद कर लाया करती थीं। वर्षों से यही क्रम चल रहा था क्योंकि हमारे पिताजी को माताजी ने बाजार

शेष पृष्ठ ३६पर

मदहोश



भूल भुलैया

गरीबचन्द तो बच निकलने में कामयाब हो गया है मगर इस बेचारी को आपकी मदद की जरूरत है :



१. मुर्गियों की छः टांगें कब होती हैं ?
२. नाक कटने पर हाथी पछताता क्यों नहीं ?
३. शतुरमुर्ग रेत में सिर क्यों छुपाता है ?

उत्तर—

१. जब मुर्गियां तीन हों।
२. हाथी नाक से ही हाथों का काम लेता है और पछताने के लिये हाथ मलना पड़ता है।
३. उसके पास सिर छुपाने के लिये और कोई जगह नहीं है।



भाव ठहराने की कला में नितांत अयोग्य पाया था। इन्टरव्यू के दौरान चीनी का भाव भी पूछा जा सकेगा। हम इसके लिए तैयार नहीं थे इस कल्पनातीत प्रश्न को सामने खड़ा देखकर हमने अपनी दुम को और अधिक दबा लिया। पर ज्यादा देर चुप रहना भी मुनासिब नहीं था। अतः हमने कह दिया—'सस्ती ही मिलती होगी, साहब।'

ये निर्णायक महोदय हमारे उत्तर से संतुष्ट हो गए शायद। अतः उन्होंने साथ ही साथ दूसरा प्रश्न भी जड़ दिया। आप फिल्में तो जरूर देखते होंगे? बताइये फिल्म 'तार-हार' की हीरोइन कौन थी?

इसकी अपनेराम को अपटूडेट जानकारी थी। अतः हमने तपाक से उत्तर दिया, 'पदमारानी!' जो पहले साइड हीरोइन का काम करती थी। इस फिल्म में हीरोइन बनी। और साहब, उसके पौ बारह हो गए। आजकल एक साथ आठ फिल्मों में काम कर रही है। किसी दिन हेमा मालिनी का मुकाबला करने लगेगी। हम एक सांस में कह गए। जब फिल्म 'तार-हार' शहर के सिनेमा घर में चल रही थी तो हमने इसे बीस बार देखा था। परीक्षक महोदय को हमने यह भी बताया कि वह बम्बई के किस 'फ्लैट' में रहती है और कब वह इस शहर में आउटडोर शूटिंग के लिए आ रही है।

हमारे चाचा के साले साहब के दोस्त ने आस पास बैठे परीक्षकों की ओर देखा और खीसें निपोरकर कहा—देखा। लड़के को कितनी जानकारी है? बड़ा होनहार लगता है। (हमारे ख्याल से उन लोगों को यह इशारा काफी था)

तीसरा और अंतिम प्रश्न ईश्वर की कृपा से फिर हमारे बिपरीत पड़ा। प्रश्न सुनते ही हमारे छक्के छूट गए। एक सज्जन ने पूछा—'हिन्दी की किसी एक मासिक पत्रिका का नाम और उसके बारे में कुछ बताइये।'

प्रश्न सुनकर हम सचमुच भौंचक्के थे। हम अक्सर अपने दोस्तों को 'सी ऑफ' करने तथा रेलवे प्लेटफार्म की सैर करने 'रेलवे स्टेशन' जाते थे। 'बुक स्टाल' पर हम बहुत सी रंग बिरंगी पत्रिकाएं भी देखा करते थे। किन्तु उनमें कौन मासिक है, कौन साप्ताहिक या पाक्षिक है इस बात पर ध्यान कभी नहीं दिया। पानी का पूरा गिलास पी जाने के बाद भी हमें किसी एक मासिक पत्रिका का नाम याद नहीं आया। हमारे चेहरे को सूखता हुआ देख हमारे चाचा के साले साहब के दोस्त बोले—'कोई बात नहीं। आजकल पत्रिकाएं भी तो ढेर सारी निकलती है। किस-किस का ख्याल रखा जाय?

'जी हां। जी हां। हमें जैसे डूबते हुए को तिनके का सहारा मिला।

आज्ञा पाकर हम तुरन्त कमरे के बाहर आ गए और सोचा, अपना नम्बर शायद ही नौकरी में आए। हमें एक ग्राम भी उम्मीद नहीं रही कि हमारा सिलेक्शन होगा।

एक उदास शाम को जब हम किसी फिल्म की दर्द भरी गज़ल गुनगुना रहे थे तो हमें अचानक पड़ोस के एक सज्जन ने खुश खबरी दी कि हमारी नौकरी लग गई। हम इन्टरव्यू में सफल हो गए थे। सिफारिशी तीर का निशाना ठीक जगह पर बैठ गया था।

अपनी सफलता पर हमें दोस्तों और परिजनों के बधाई संदेश मिले। हम अब अक्सर कहा करते 'अजी इन्टरव्यू देकर नौकरी पाना क्या कोई आसान काम है? इन्टरव्यू लेने वाले ऐसे वैसे को तो नाकों चने चबवा देते हैं।'

किन्तु इन्टरव्यू देकर नौकरी पाने की वास्तविकता से हमारी कितनी पहचान है यह हम जानते है या हमारे चाचा के साले के दोस्त। ●



● एक नेता जी दौरे पर गये। उनका वहां की जनता ने झंडों के साथ स्वागत किया। दूसरे दिन समाचार-पत्र में समाचार छपा, नेताजी का अंडों के साथ स्वागत किया गया।'

नेताजी आग बबूला हुये। उन्होंने सम्पादकों को फोन किया। सम्पादक ने छपाई की गलती के लिये क्षमा याचना की और वचन दिया कि दूसरे दिन के पत्र में वह गलती-सुधार छापेंगे।

दूसरे दिन समाचार पत्र में छपा! 'कल गलती से नेता जी का अंडों के साथ स्वागत का गलत समाचार छपा। यह सब छपाई की गलती के कारण हुआ। हमें खेद है। सही समाचार यह है कि नेताजी का डंडों के साथ स्वागत हुआ था।'

● ग्राहक वेटर से, 'गिलास ठीक तरह पकड़ो! तुमने अंगूठा चाय में डुबो रखा है।'

वेटर, 'कोई बात नहीं साहब! चाय गर्म नहीं है।'



मैं अपनी पत्नी से तलाक लेने की सोच रहा हूँ। तुम्हें मालूम है उसने छह महीनों से मुझसे बात ही नहीं की।
मेरी सलाह है कि अपने फैसले पर फिर गौर करो। इतना कम बोलने वाली पत्नी आज-कल मिलती कहाँ है?
अचलेश
व्यंग्य चित्र
पहले हाथ 'प्यार' करने के लिए पकड़ते थे.....
...और अब हाथ 'बचाव' के लिए पकड़ते हैं!
अमरेश
आपका मकान बिलकुल बेकार है, सारा दिन पानी टपकता रहता है, आप ही बताइये कि ऐसा कब तक होता रहेगा?
जब तक बरसात का मौसम समाप्त नहीं हो जाता!
अमरेश

होगा··· उसने बहुत सोचा लेकिन उसे कोई रास्ता सूझा नहीं···स्वयं उसमें इतना साहस नहीं था कि मां और पिताजी को बता देता ···शाम को सरिता आई तो विनोद ने कहा—

'सरिता ! तुमने राधा के बारे में सुझाव तो दे दिया कि उसकी शादी शीघ्र हो जानी चाहिए···अब इस बात को मां और पिताजी के कानों तक पहुंचाने की भी कोई युक्ति निकालो ।'

जब तक तुम में आत्मसंकल्प का अभाव रहेगा तब तक तुम्हारी कायरता समाप्त नहीं होगी ।' सरिता ने कहा—'इसमें युक्ति की कौन-सी बात है इसलिए उनको स्पष्ट शब्दों में बता दो ।'

'यह तो मुझसे नहीं हो सकेगा ।'

'मेरा तुम्हें परामर्श है कि अगर दुनिया में रहकर कुछ उन्नति करनी है तो इस मानसिक दुर्बलता को पहले समाप्त करना होगा ।'

कर लूंगा, लेकिन इतनी जल्दी तो यह सम्भव नहीं ।'

'अच्छा···मैं कह दूंगी···बोलो पिताजी से कहूं या मां जी से ?'

'तुम कह दोगी ?' विनोद आश्चर्य से बोला, 'ऐसी बात तुम एक लड़की होकर पिताजी और मांजी से कह लोगी ।'

'मेरी बात तो नहीं है जो कहते हुए डरूं और शरमाऊं···फिर यह बातें भी इसी दुनिया की उत्पति हैं जिसमें मैं, तुम, राधा, यह तुम्हारे माता-पिता रहते हैं···सभी यह बातें देखते हैं···अन्तर केवल यह है कि कोई बात की गहराई तक शीघ्र पहुंच जाता है और थोड़ी देर में···रह गई कहने की बात तो मांजी पिताजी से कह सकती हैं ···पिताजी मांजी से कह सकते हैं···बल्कि मांजी अपनी आयु की हर स्त्री से कह सकती हैं और पिताजी अपनी आयु के प्रत्येक मर्द से कह सकते हैं···पर मैं तो मांजी और पिता जी से कह ही दूंगी···सोच लूंगी कि मैं भी उनकी समान आयु हूं ।'

लेकिन मांजी और पिताजी कहीं तुम्हें निर्लज्ज···क्षमा करना ।'

'तुम्हारे पिताजी और मां का हृदय बहुत विशाल है···यह मैं बहुत पहले अनुभव कर चुकी हूं वरना आज मैं इतनी रात गए अकेली तुम्हारे कमरे में यूं बैठी न पढ़ रही होती ।'

'अच्छा, भई कहो···।'

पढ़ने के बाद सरिता उठकर सीधी बड़े कमरे में आई जहां मां और पिताजी फूलवती की शादी की चिंता में डूबे हुए थे···दोनों ने सरिता को प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा ।

'पिताजी और मांजी···।' सरिता ने बड़े ठहराए से और स्पष्ट शब्दों में कहा, 'मैं आपको एक बड़े खतरे की चेतावनी देने आई हूं ।'

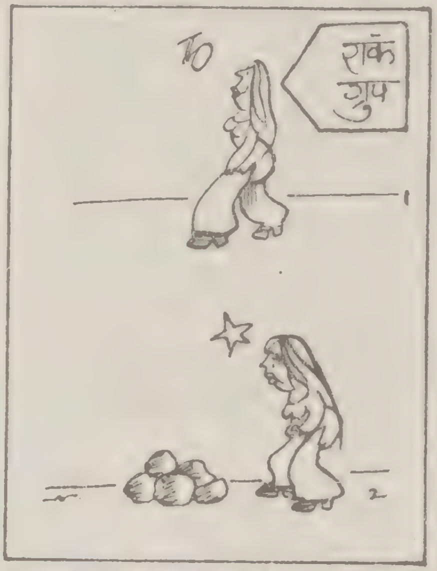
'कैसा खतरा बेटी ?' पिताजी आश्चर्य से उसे देखते हुए बोले ।

'राधा और रघु की शादी शीघ्र कर दीजिए वरना इस घर की इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी, बदनामी होगी ।'

'क्या ?' पिताजी और मां के मुंह से एक साथ निकला ।

'रघु ही से शादी हो तो बेहतर है ।'

सरिता अपनी बात कहकर चुप-चाप



घर से निकल गई···मां और पिताजी आश्चर्य चकित देखते ही रह गए···फिर वह गहरी चिंता में डूब गए···थोड़ी देर बाद ही उन्होंने बुआ और फूफा को बुला कर इस खतरे की सूचना दी···इस खबर पर पति-पत्नी दोनों एकाएक जलकर बोले—

'हमारी बेटी ऐसी नहीं हो सकती···यह सब दुश्मनों की उड़ाई हुई है ।'

'देखो···।' पिताजी ने धैर्य से कहा, 'चीखने-चिल्लानेसे बात फैलेगी···अच्छा यह होगा कि राधा, को बुलाकर नम्रता से पूछा जाए···इस बात की भी आसानी है कि आज कल रघु के भाई और भावज भी यहां हैं ।'

'रघु···! ऊंह !!' बुआ मुंह बिचकाकर बोलीं—'उस दो कौड़ी के आदमी से अपनी बच्ची का भाग्य फोड़ूं···यह कभी नहीं हो सकता ।'

'अच्छा···तुम चुप रहो···। फूफा ने डांट लगाई ।

वास्तव में फूफा की समझ में कुछ-कुछ बात आ गयी थी—उन्होंने राधा को बुलाया ···पहले तो वह बिदक गई और निरन्तर इन्कार करती रही···जब अधिक दवाब डाला गया तो रो पड़ी और अपनी भूल को स्वीकार कर लिया···फिर क्या था क्रोध से फूफा घूंसों और लातों से राधा की मरम्मत करने लगे···झगड़ा सुनकर विनोद बाहर निकल आया···उसने बड़ी मुश्किल से राधा को बचाया और बुआ के कमरे में छोड़ आया ।

'यह सब इसी का दोष है ।' फूफा हांफते हुए बुआ की ओर संकेत करके बोले, 'न लड़की को इतनी स्वतन्त्रता देती और न यह नौबत आती···दूसरी लड़कियों को आवारा और बदचलन बताती है—नीच कहीं की ।

बुआ फिर रोने लगीं···पिताजी ने समझाया कि गुस्सा समाप्त करके इस समस्या का हल सोचो···इस प्रकार चीखने से तो और बदनामी का खतरा है ।

गम्भीरता से सोच-विचार के बाद यह निश्चित हुआ कि कल मासी को बुला कर उसे सारे हाल से अवगत कराया जाए और कहा जाए कि वह रघु को इस शादी पर सहमत करे ।

दूसरे दिन सवेरे ही मासी को बुलाकर उसके देवर की करतूत की दास्तान सुना दी गई । मासी ने बड़ी भावज के नाते रघु को बुलाकर बुरा-भला कहा और सबके सामने दो थप्पड़ भी मारे—रघु पहले तो सब सुनता रहा लेकिन जब भावज ने उससे शादी के लिए कहा तो बिदक गया और बड़े उजड्ड ढंग से साफ बोला—

'मैं यह शादी कदापि नहीं कर सकता ···क्या शादी करके मैं हर समय रानी साहिबा पर पहरा लगा कर रखूंगा ? क्या भरोसा जो लड़की शादी से पहले ऐसा काम कर सकती है. वह शादी के बाद अपनी हर-कतें छोड़ देगी ?'

यह कहकर वह गुस्से से कमरे से बाहर निकल गया और उसी दिन शाम को अपना सामान लेकर वीरेन्द्र के यहाँ चला गया।

यह उन लोगों के लिए नई समस्या थी ...पहली समस्याओं का ही अभी कोई हल नहीं निकला था कि यह एक और गम्भीर चिन्ता आन पड़ी...और फिर यह मामला घर की शेष सब समस्याओं से विभिन्न था... कोई हल भी तो संभव नहीं था...इसका इज्जत राख में मिल जाएगी...विनोद कुछ अधिक ही चिन्तित था।

शाम को बिनोद ने यह बात सरिता को सुनाई तो उसने कहा—

'मैं लड़का नहीं हूं वरना भगवान कसम राधा से मैं ही शादी कर लेती...मुझे तुम्हारे घर की इज्जत इतनी ही प्यारी है।'

'यह तो अनुभव करता हूं।' विनोद ने ठंडी सांस लेकर कहा।

पढ़ने के बाद सरिता बड़े कमरे में गुजरती हुई बाहर चली गई—सड़क पर पहुंच कर अपने घर की ओर जाने के स्थान पर वह बैठक की ओर चल पड़ी—बैठक के दरवाजे पर पहुंच कर उसने दस्तक दी...कुछ क्षण बाद दरवाजा खुल गया...राजेश ने सरिता को खड़े देखा, तो एकाएक बौखला गया।'

'अब मैं यहीं खड़ी रहूं ...?' सरिता ने कुछ क्षण खड़े रहकर पूछा।

'स...स...आइए...आइये।' राजेश बौखलाकर सामने से हट गया।

वास्तव में वह सरिता को देखकर इतना बौखला गया था कि उसे अन्दर आने के लिए भी कहना भूल गया—सरिता बड़े संतोष से अन्दर आ गई। राजेश खड़ा हुआ उसे आश्चर्य से देखता रहा।

'मैं तुम्हारे पास एक बहुत जरूरी काम से आई हूं।' सरिता ने खड़े-खड़े कहा।

'क...क...कहिए...ब......ब......बैठ जाइए।'

'तुम विनोद के दोस्त हो...यह मैं जानती हूं। सरिता ने बैठते हुए कहा, 'विनोद के दोस्त सुरेन्द्र और मोहन भी हैं लेकिन मैं इसलिए उनके पास नहीं गई कि वे केवल नाम के दोस्त हैं...उनके मन में विनोद के लिए सच्चा प्यार नहीं।'

कुछ देर मौन रहा...राजेश अब भी सरिता को आश्चर्य-भरी नजरों से देखे जा था। फिर स्वयं ही सरिता बोली—

'तुम विनोद के दोस्त हो इसलिए मुझे विश्वास है कि विनोद के खानदान की इज्जत भी तुम्हें प्यारी होगी।'

'निःसन्देह...।' राजेश ने हाँ में गर्दन हिला दी।

'मेरा अनुमान साधारणतया ठीक ही होता है::विनोद की चिंताएं, तुम्हारी और मेरी चितायें हैं...जिन्हें हल करने में तुम उसकी सहायता कर सकते हो...मैं नहीं... ...क्योंकि तुम पुरुष हो।'

'मैं समझा नहीं—।'

'तुम विनोद की बुआ की लड़की राधा से शादी कर लो।'

'वहां क्यों?' राजेश अचम्भे में पड़ता हुआ बोला।

'शादी कर लो...क्योंकि मैं कह रही हूं...दोस्तों में क्यों और कैसे के प्रश्न नहीं होने चाहिए।'

'मैं कर लूंगा...' राजेश ने दृढ़ता से कहा, 'अब तो मुझे तुमसे यह पूछने का अधिकार है कि तुमने यह सुझाव क्यों रखा?'

'मैं तुमको जरूर सब कुछ बताऊंगी... क्योंकि मुझे तुम पर विश्वास है कि सब बातें सुनने पर भी तुम राधा से शादी कर लोगे। यह कहते हुए सरिता ने राधा और रघु की सारी कहानी राजेश को सुना दी और विनोद और उसके पिता की चिन्ताओं का विस्तार से ब्यौरा दिया।

इस बारे में मुझे विनोद से शिकायत है। राजेश बोला, 'उसने स्वयं मुझसे क्यों नहीं कहा? क्या उसे मुझपर भरोसा नहीं?'

'किसी बोध-भ्रम में मत पड़ो...विनोद के मस्तिक में तो यह बात आई भी नहीं है —यह तो मुझे तुम्हारा ध्यान आ गया और मैं इधर चली आई।'

'अब मैं सन्तुष्ट हूं।' राजेश ने मुस्कराकर कहा, 'एक सप्ताह के अन्दर हमारी शादी हो जायेगी।'

सरिता सन्तोष की साँस लेकर वहाँ से उठकर सीधी दोबारा विनोद के घर पहुंची ...विनोद अपने कमरे में ही था...लेकिन वह विनोद के कमरे में न जाकर सीधी बड़े कमरे में पिताजी और माँ के पास आ गई—पिता जी ने आश्चर्य से उसे देखा...यह पहला अवसर था कि उन्होंने सरिता को दूसरी बार घर में आते देखा था और वह भी सीधा उनके पास।

'कहो बेटी...कुशल तो है।' पिताजी ने उसकी ओर देखकर पूछा।

हां पिताजी...मैं आपकी एक उलझन दूर करने आई हूं।'

'कैसी उलझन बेटी?'

'आप राधा के बारे में चिंतित हैं ना?'

'हां...हैं तो...और इस सम्बन्ध में हम तुम्हारे आभारी हैं कि तुमने समय से पहले ही सूचित कर दिया।'

'राधा की शादी एक सप्ताह के अन्दर-अन्दर हो जाएगी।'

'भला कैसे?' पिताजी आश्चर्य से बोले।

'विनोद का दोस्त राजेश राधा से तुरंत शादी करने के लिए सहमत है—आप यह बात राधा के माता-पिता को बता दें—।

यह कहकर सरिता बिना और कोई बात किए वहां से उठकर बाहर चली गई— माँ और पिताजी बड़ी देर स्तब्ध से बैठे रहे जैसे कोई अनहोनी बात हो गई हो...फिर थोड़ी देर बाद पिताजी चौंके और अपनी बहन को बुलाकर बोले—

'सुनती हो...राधा की शादी हो जाएगी।

'ईं...' बुआ एकाएक चौंककर बोलीं, 'कौन करेगा, किससे होगी?'

'सरिता ने निश्चित की है...विनोद के दोस्त राजेश से होगी', पिताजी ने कुछ व्यंग से कहा, तुम तो सरिता को आवारा और बदचलन कहती थीं ना, यह भगवान ने तुम को इस बात का दंड दिया था और अब वही बदचलन लड़की तुम्हारे लिए देवी का रूप धारण करके आई है।'

शेष आगामी अंक में

● एक नाई ने एक व्यक्ति की शादी तय करवाई। लड़की की सुन्दरता का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन किया। शादी के दिन दूल्हे ने लड़की देखी और गुस्से में भर नाई को एक ओर ले गया और फुसफुसा कर बोला, 'तुमने झूठ क्यों कहा? लड़की तो काली, बदसूरत है, बूढ़ी है, सांस में बदबू है, टेढ़े दांत हैं और बहरी है...' नाई बोला, 'फुसफुसा कर बोलने की जरूरत नहीं है। लड़की बहरी भी है।'

रंग मंच की उभरती नर्तकी जिसे 'कत्थक' और 'भरत नाट्यम' नृत्यों में महारथ है—

मन्जु

रंग मंच के ऐसे कितने ही सुन्दर और चर्चित सितारे हैं जो अपने नृत्य, कला, अभिनय से दर्शकों का मन मोह लेते हैं। इन कलाकारों में कम उम्र के कलाकार भी हैं जिन्हें बचपन से ही कला से प्रेम रहा है और बड़ी उम्र के 'मैच्योर' कलाकार भी हैं। राजधानी में प्रतिदिन कोई न कोई कहीं ना कहीं स्टेज प्रोग्राम पेश किये जाते हैं। इन स्टेज कलाकारों को चाहने वाले दर्शक भी अपना एक विशेष वर्ग बनाये हुए हैं। यह प्रोग्राम कमर्शियल भी होते हैं और कला को समर्पित भी। सांस्कृतिक भी होते हैं और ऐतिहासिक भी। इस सप्ताह हम आपकी मुलाकात एक स्टेज नर्तकी मन्जु से करवा रहे हैं। यह कत्थक और भरत नाटयम नृत्यों में महारथ रखती हैं। सोलह वर्षीय कु० मंजु इस छोटी सी उम्र में ही बड़े-बड़े कलाकारों के कान कतरती है। अब तक मंजु स्टेज पर दर्जनों प्रोग्राम पेश कर चुकी हैं। नृत्य करते देख ऐसा लगता है कि इन्हें अपने शरीर के हर अंग प्रत्यंग पर पूरा 'कमांड' है। एक नृत्य प्रोग्राम देखने के बाद मैंने मेकअप रूम में ही मन्जु को घेर लिया। वह भरत नाट्यम का प्रोग्राम पेश करके अपने घुंघरू आदि उतारने में व्यस्त थीं। मैंने दीवाना साप्ताहिक के लिये उनसे कुछ वार्तालाप करनी चाही तो वह सहर्ष तैयार हो गईं। साथ पड़े स्टूल पर बैठने का सम्बोधन कर वह बोलीं, 'आपको मेरा यह कार्यक्रम कैसा लगा ?'

'बेहद अच्छा तभी तो……।'

मैं अभी कुछ कह ही रहा था मन्जु बोल उठीं, 'आप इन्टरव्यू लेने चले आये, आपको मेरा नृत्य अच्छा लगा इसके लिए धन्यवाद।'

मंजु अपने पांवों में बंधे घुंघरू खोल रही थीं तो मैंने देखा उनके नरम-नरम पैरों पर घुंघरू के बंधने से लाल-लाल निशान पड़ गये हैं।

'आपके पैरों में इन घुघरूओं को बंधने से तकलीफ नहीं होती ?' मैंने पूछा तो मंजु



मुस्करा उठीं।

'नहीं अब नहीं होता दर्द, अब तो आनन्द सा आता है पांवों में घुंघरू बांध कर। लेकिन बचपन में मुझे घुंघरूओं से बड़ी तकलीफ होती थी। आप स्वयं अनुमान लगा लीजिये एक पांव में दो-दो सौ से लेकर ढाई-ढाई सौ तक घुंघरू बांधे जाते हैं।'

'नृत्य आपकी 'हाबी' (शौक) है। अभी आप पढ़ ही रही होंगी। बड़ी होकर आप क्या बनना पसन्द करेंगी ?' मैंने पूछा तो मन्जु ने एक बार अपनी मम्मी की तरर्फ देखा फिर बोलने लगी, "फिलहाल तो यह मेरा शौक ही समझिये लेकिन आगे चल कर अगर



मुझे यही नृत्य व्यवसाय के रूप में अप[नाना] पड़ा तो भी मैं नहीं झिझकूंगी।'

'व्यवसाय का मतलब आप नृत्य [प्रशिक्षण] केन्द्र खोलने का प्रोग्राम रखती हैं या और बात है ?'

नहीं ! फिलहाल तो मेरा झुकाव [नृत्य] में महारथी होने की ओर है, दूसरों को सिखाने की बात अभी दूर है। हाँ ! अभि[नय] की ओर मैं अपना दिमाग लड़ा रही [हूं।] एक नर्तकी कुशल अभिनेत्री बन सकती [है।] पिछले दिनों सुनीता फिलमज के झण्डे [तले] बन रही एक फिल्म की आफर मुझे मिली जो मैंने स्वीकार कर ली है। फिल्म में नृत्यों का विशेष आकर्षण होगा। वैसे भूमिका मुझे मिली है, वह एक 'माड न[ारी'] की है जो ढिशुम ढिशुम भी करती है 'ब[ल्ले] सोंग' भी गाती है, नाचती भी है और फ[ाइट] भी करती है। फिल्म शीघ्र ही सैट पर च[ली] जायेगी।' मंजु ने आत्म विश्वास के स[ाथ] कहा और फिर उल्टा मुझ से ही प्रश्न [कर] बैठीं, 'आप ही बताइये क्या एक नर्त[की] अभिनेत्री नहीं बन सकती ?'

'क्यों नहीं बन सकतीं ? वैजयन्ती मा[ला] आशा पारेख, पदमिनी, हेमा मालिनी आ[दि] सभी अभिनेत्रियां नर्तकी पहले हैं अभिने[त्री] बाद में।' मैंने अन्तिम प्रश्न पूछा, 'आ[पके] शौक कौन-कौन से हैं ?'

'मैं मोटर साइकिल, स्कूटर चलाने [के] अलावा घुड़सवारी में भी दिलचस्पी रख[ती] हूं, तैराकी के अलवा मछली के शिकार [का] भी मुझे शौक है।' मंजु ने कहा।

'मान लो आप फिल्मों में प्रवेश [कर] जायें और सफल भी हो जायें फिर आपक[ी] क्या इच्छा होगी ?'

'आपने तो बड़ी दूर की बात पूछ ली… क्या बताऊं आपको, मेरी इच्छा यही होग[ी] की एक नृत्य एकादमी की स्थापना करूं औ[र] सभी शैली के नृत्यों की वहां ट्रेनिंग दूं।

जिस तरह वैजन्तीमाला और आश[ा] पारेख कर रही हैं।' मैंने मन्जु के दिल क[ी] बात मांपते हुए कहा तो मन्जु हंस दीं। औ[र] मैं जैसे ही उठने लगा मन्जु बोलीं, 'दीवान[ा] साप्ताहिक के सहयोग की मैं सदा आभा[री] रहूंगी और इसकी परमानेंट पाठिका ब[नी] रहूंगी।'

● विजय भारद्वाज ●

दीवाना के लिये विशेष भेंट वार्ता



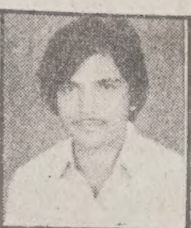
...ार बैद, पोस्ट ऑफिस ...ातरी, (म० प्र०), ... पत्र मित्रता करना ...ढ़ना, हाकी का खेल



रमेश कुमार व्यास, द्वारा गोपाल दास व्यास, चौवासी श्रीमाली का चौक, बीकानेर, (राज०), १५ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना।



महेश सक्सेना, द्वारा श्री के० सी० सक्सेना, बी० एम० १४७१, श्याम निवास सिविल लाइन, न्यू कालोनी झाँसी, १५ वर्ष, टिकट संग्रह करना।



मन्जीत राय बालियां, १२६/३, पी०, गोविन्द नगर, कानपुर, १९ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, रोब गाठना, फिल्म देखना, दीवाना पढ़ना।



मोहन जीत सिंह, न० ७८०, ब० १६ मिलर गंज लुधियाना, पंजाब, १६ वर्ष, हाकी खेलना, दीवाना पढ़ना, क्रिकेट खेलना।



भरत कुमार गुप्ता, ६०६ बनल बाजार, बम्बई (म. प्र.), २० वर्ष, अपने साथियों के संकट के समय उनका साथ देना।



लक्ष्मी प्रसाद श्रेष्ठ, २०/२४३, सोर खुट्टे नेपाल, १५ वर्ष, दीवाना पढ़ना, उपन्यास पढ़ना, टिकट संग्रह करना, हाकी खेलना।



...कुमार 'दोस्त' द्वारा ... शर्मा, कबूतरों का ...पुर, २५ वर्ष, पत्र- ...दीवाना पढ़ना, गीत ...।



चन्द्र प्रकाश कालड़ा, २ जे०/११७, एन० टी० टी० फरीदाबाद, २५ वर्ष, फिल्म देखना, दीवाना पढ़ना, तार भेजना।



भूषण कुमार सिक्का, २३० मालवीय नगर, मुरादाबाद, २३ वर्ष, फिल्में देखना, मित्रों के साथ फोटो खिचवाना व दोस्ती बढ़ाना।



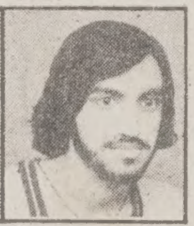
सनत घखोरी, जेल के नजदीक गिरिडीह, १२ वर्ष, कार्टून बनाना, चित्रकारी बनना, फरमाईश भेजना, कविता पढ़ना, हवा में टहलना।



सुरेश कुमार गोयल, एस० एन० १६७/१, सुमाई गली, अम्बाला शहर, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, कमेंट्री सुनना, दीवाना पढ़ना।



बलीराम धर्मानी, राजेश किराना स्टोर्स, बैरन बाजार रायपुर, (म० प्र०), १३ वर्ष, दीवाना पढ़ना, फुटबाल खेलना, तार भेजना।



किशोर होतवानी, होतवानी क्लाथ स्टोर्स, गोल बाजार रायपुर, (म० प्र०), २० वर्ष, पत्र-मित्रता, डांस करना, गिटार बजाना।



...'मलिक' पी०/६०, ...गंज सहारनपुर, ११ ...ों की सहायता करना ...ाई-लिखाई करना, ...ना।



सर्वजित निरंजन सिंह सेठानी, पाठणी चौक, १२ वर्ष, कपड़े अच्छे पहनना, घूमना, बाहर टहलना, कविता लिखना, तार करना।



मुन्ना बाबू विद्यार्थी, एम० ई०/१३७, धनबर गंज, स्टेशन रेलवे दीवानी के पास कानपुर, १६ वर्ष, पढ़ना, दीवाना पढ़ना, घूमना।



संजय आर्य, १०५/४६५, श्री नगर कानपुर, (उ० प्र०), १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना, नहाते समय गाना-गाना, खूब हंसना।



सुनील सचदेव, २६५/८, कृष्णा कालोनी (भिवानी), हरियाणा, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता, खेलना व पढ़ना, तेज चलना।



रविन्द्र होतवानी, चर्च के पास, बैरन बाजार रायपुर, (म० प्र०), १७ वर्ष, पत्र मित्रता, डाक टिकट इकट्ठी करना।



राजेश कुमार जयसवाल, ६६, माया बाजार गोरखपुर, १४ वर्ष, सिनेमा देखना, दीवाना पढ़ना, घूमना, रेडियो पर कमेंट्री सुनना।



...कुमार अरोड़ा, ६७- ...ई कृष्णा रोड, आदर्श ...ल्ली १८ वर्ष, टिकट ...करना, पत्र मित्रता



अग महेन्द्र अग्रवाल, मकान न० १२ देवी गंज, पोस्ट हरिजेन्द्र नगर, कानपुर, १६ वर्ष, बच्चों का प्यार करना, शिक्षा ग्रहण करना।



अमरजीत सिंह, एन० ७, मेन ग्रीन पार्क, न्यू दिल्ली, १६ वर्ष, पत्र मित्रता, ताश खेलना, माल पैकिंग करना, शतरंज खेलना।



रमेश कुमार, यू० आर० ओ० जनौली, पलवल, १६ वर्ष, पत्र मित्रता, दीवाना पढ़ना, किशोर कुमार के गीत सुनना, फरमाईश भेजना।



पृथ्वीराज चौहान, ओ० पी० ओ०, जनौली पलवल, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता, गाने सुनना, फिल्मों में एक्टिंग करना।



मदेश कुमार गर्ग, ५२, सदर बाजार नसीराबाद, (राज०), १७ वर्ष, पत्र मित्रता करना, बैडमिंटन खेलना, किताब पढ़ना।



बिमल कुमार बराल, ३१६६ हाले कुपा धोबी धार), ललितपुर, (नेपाल), १५ वर्ष, चित्रकला, पत्र मित्रता, मोटर चलाना।



...बज्राचार्य ओलि, ...हुमाल काठमाडौ ...), १७ वर्ष, पत्र- ...करना, फिल्म देखना, ...पढ़ना।



सुरेन्द्र 'मदान' द्वारा कृष्णा सोप फैक्टरी लाडवा, २२ वर्ष, खाली रहना, नदी में तैरना, हवा में टहलना, परिश्रम करना।



रोमल राही, भारत कान्वेन्टस, शाहाबाद (कुरुक्षेत्र), २० वर्ष, सच्ची मित्रता, उपन्यास पढ़ना, लड़कों से दोस्ती करना, तार करना।



सुरेन्द्र सिंह, 'सोनी' बिल्ला बद्रीनाथ, मार्ग मालवीय उद्यान, कोटद्वार, १९ वर्ष, कहानी लिखना, पत्र लिखना, मोटर साईकिल चलाना।



पवन कुमार गायन, प्रेमी दवाखाना, मार्केट कमेटी के सामने, १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना, क्रिकेट खेलना, हवा में टहलना, डाक भेजना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा।

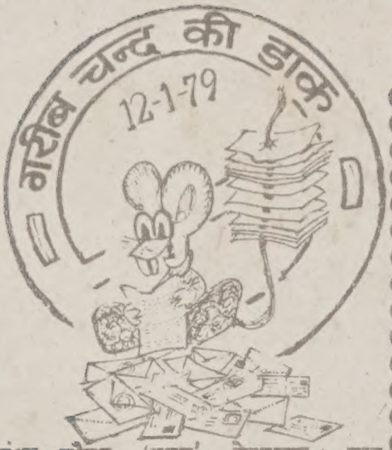
हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ________

पता ________

आयु ________ शौक ________

..., नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।



अशोक जौहर 'गगन'—देहरादून : यार दोस्त, अपना बेड़ा गर्क करने पर तुले हैं बताइये मैं क्या करूं ?

उ० : अपने यारों से दोस्ती की गांठ और मजबूती से बांध लीजिए ताकि जब आपका बेड़ा गर्क हो जाये तो वह भी साथ में डूब जायें। आप 'तुम्हें भी ले डूबेंगे सनम' को अपना नारा बनाइये।

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : मनुष्य के लिए आप किस प्रकार लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं ?

उ० : हमने मनुष्य के लिए अपना जीवन कुर्बान कर दिया है। दवाओं का सबसे पहले प्रयोग हम पर ही किया जाता है।

प्र० : गरीबचन्द जी मेरा एक कार्य कर दीजिए।आप कार्यालय में मेरी इन्कम टैक्स की फाइल कुतर कर मेरा रिकार्ड नष्ट कर दो,बदले में जो चाहे ले लो ?

उ० : आपने मेरा बिगाड़ा ही कुछ नहीं तो आपको नुक्सान क्यों पहुंचाऊं ? शायद आप इन्कम टैक्स वालों से वाकिफ नहीं हैं। फाइल का नष्ट होना उन्हीं के लिए फायदेमंद है। वह नया रिकार्ड बनवाने के लिए आपकी खूब हजामत करेंगे ! इन्कम टैक्स वाले तो भले चंगे रिकार्ड की फाइल भी गुम कर देते हैं और उसे निकलवाने के भी पैसे लेते हैं।

धर्मेन्द्र कुमार दुर्धा—रायपुर : श्री गरीबचन्द जी क्या आप मेरी दुकान में आयेंगे, यहाँ पर बहुत अनाज है। शायद आपको वहाँ तकलीफ होती होगी ?

उ० : वाह भई अनाज से ही टकराना चाहते हो ? आपके लैटर हैड पर छपा है फल, आलू, प्याज, लहसुन, व सब्जी के विक्रेता।

> **गरीब चन्द की डाक**
> दीवाना साप्ताहिक
> ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
> नई दिल्ली-११०००२

'जुनून' के प्रदर्शन पर नफीसा अली और शशि कपूर के रोमांस से तंग आकर शशि कपूर की पत्नी द्वारा आत्महत्या का प्रयास ?



शशि कपूर

● विजय भारद्वाज

अभिनेता निर्माता शशि कपूर फिल्मों में आने से पहले स्टेज पर अभिनय करते थे। ठीक उसी तरह जिस प्रकार इनके पिता स्व० पृथ्वीराज कपूर स्टेज से बंधे रहे। और स्टेज के बाद फिल्मों में बेतहाशा सफलता पाई। राजकपूर और शम्मी कपूर के छोटे भाई शशि कपूर की प्रथम हिन्दी फिल्म थी 'आवारा' जिसमें इन्होंने बाल भूमिका निभाई थी।

इसके उपरान्त शशि कपूर व्यस्क होने पर नायक बन कर फिल्मी पर्दे पर आये और आज तक सफलतापूर्वक अभिनय कर रहे हैं। 'हाउस होल्डर', 'सैटरूनी बटवाला' आदि अंग्रेजी फिल्मों में भी इन्होंने काम किया। इनकी कुछ उल्लेखनीय हिन्दी फिल्में इस प्रकार हैं धर्म पुत्र, प्यार किये जा, वक्त, हसीना मान जायेगी, जहाँ प्यार मिले, जीवन संग्राम, चोर मचाये शोर, दीवार, रोटी, कपड़ा और मकान व पिछले दिनों सातवें अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में प्रदर्शित फिल्म 'जुनून', जिसके निर्माता भी स्वयं शशि कपूर हैं।

फिल्म 'जुनून' के नाम पर ही वह किस्सा और वह अफवाहें याद आ गईं जो शशि कपूर की पत्नी जैनिफर कैंडल से सम्बन्धित है। कई पत्रिकाओं (हिन्दी-अंग्रेजी) में यह पढ़ने को मिला कि 'जुनून' के प्रदर्शन पर शशि कपूर की पत्नी जैनिफर भी फिल्म की अन्य कास्ट के साथ दिल्ली आई थीं और वह मौर्या होटल में ठहरी थीं। 'जुनून' में नयी फिल्म तारिका नफीसा अली व शशि कपूर के रोमांस की खबरें आज भी नयी हैं और इन्हीं खबरों को सुनकर व शशि के व्यवहार पर रुष्ट होकर फिल्म के प्रदर्शन वाले दिन जैनिफर ने कोई विषैला पदार्थ खाकर आत्म हत्या करने की नाकाम कोशिश की थी। दिल्ली के एक छोटे से अस्पताल में जैनिफर को मूर्छा अवस्था में दाखिल कराया गया। अस्पताल में जैनिफर के पति के नाम के बजाय उसने पिता का नाम लिखवाया गया ताकि मामला उठेना। कई दिन जैनिफर अस्पताल में रही और डाक्टरों के परिश्रम से उनकी जान बच गई।

जब यह खबर (अफवाह) मैंने पढ़ी तो मैं दंग रह गया। मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। क्योंकि 'जुननू' के प्रदर्शन वाले दिन में फिल्म के कलाकारों के साथ ही था। जैनिफर कैंडल पूर्णतया स्वस्थ ही नहीं अपितु अत्याधिक समार्ट लग रही थीं। निर्देशक श्याम बैनेगल, नायिका नफीसा अली आदि भी उपस्थित थे। हाँ ! शशि कपूर अवश्य गैर हाजिर था। पूछने पर पता चला था कि वह किसी शूटिंग के सिलसिले में गया हुआ है।

शशि कपूर से हाल ही में हुई मुलाकात में मैंने जब उपरोक्त अफवाहों की पुष्टि चाही और सभी प्रकाशित अफवाहों पर प्रकाश डाला तो शशि कपूर मुस्कुरा उठे बोले 'जब पत्रकारों को लिखने को कुछ नहीं मिलता तो शायद वह ऐसी ही अफवाहें उड़ाते हैं। ना तो मेरा नफीसा अली से कोई रोमांस है और ना जैनिफर ने मुझ से दुखी होकर आत्म हत्या की कोशिश की है। म[illegible] की बात तो यह है कि नफीसा [illegible] मेरे बेटे की गर्ल फ्रेंड है। शशि के स्पष्ट शब्दों को सुनकर मुझे खुशी हुई और मैंने सोचा दीवाना साप्ताहिक के माध्यम से इस स्टेज पर की अफवाह का खण्डन किया जाये।

एटलस एपार्टमैंट हार्किस रोड
बम्बई—४०००२६